

इस्लाम में महिलाओं के अधिकार  
समान या बराबर ?

Rights of women in Islam  
**Equal or Similar?**



**M. T. KAIFI**

क्या इस्लाम में महिलाओं के अधिकार  
पुरुषों के बराबर या समान हैं ?

- ❖ Book Name: RIGHTS OF WOMEN IN ISLAM: EQUAL OR SIMILAR
- ❖ All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying or any information storage without written permission from its compiler.
- ❖ Any dispute arising shall be under the purview of Delhi Jurisdiction only.
- ❖ Please be a part of this noble work by conveying your comments via e-mail or by post to its publisher.

Minority Development and Protection Foundation  
 E-33, 1 st Floor, Street No. 06, Abul Fazal Enclave - 2  
 Shaheen Bagh, Jamia Nagar, New Delhi-110025(India)  
 E-mail: mdpf2007@gmail.com / URL- minoritydpf.com

- ❖ Pages:- 84
- ❖ Year: 2022
- ❖ Languages: Hindi, English and Urdu

Note:- The publication of this volume, which costs INR 400 or \$30, but a Hadiya (donation) of any amount will be most welcome as it will contribute to the monetary resources of the "Minority Development & Protection Foundation (MDPF)" in helping the weaker sections of the minority in various ways, particularly in making the infrastructure of the educational institutions running under the aegis of the foundation for their children more effective.

Printed By  
 Wonders India Enterprises  
 2074, 2 nd Floor, Nahar Khan Street,  
 Daryaganj, New Delhi (India) Mob: 9811200621  
 Email: wondersindiaenterprises@gmail.com

When **Tawakul Karman (Noble prize winner from Yemen)** was asked about her Hijab by journalists?

She replied...

"Man in the early times was almost naked, and as his intellect evolved he started wearing clothes. What I am today and what I'm wearing represents the highest level of thought and civilization that man has achieved and is not regressive.

It's the removal of clothes again that is regressive back to ancient times."

जब पत्रकारों ने तवाकुल करमान (यमन की नोबल पुरस्कार विजेता) से उनके हिजाब के बारे में पूछा?

उन्होंने जवाब दिया

शुरुआती समय में मनुष्य लगभग नग्न था, और जैसे-जैसे उसकी बुद्धि विकसित हुई उसने कपड़े पहनना शुरू कर दिया। आज मैं जो हूँ और जो मैं पहन रही हूँ वह उस उच्चतम स्तर के विचार और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है जिसे मनुष्य ने हासिल किया है और यह प्रगति में बाधा बिलकुल नहीं है। आज इन कपड़ों को शरीर से हटाना प्राचीन काल में फिर से वापिस जाने जैसा होगा।"



## ऋग्वेद क्या कहता है महिलाओं के बारे में

It is difficult to control the minds of women. It requires great and liberal understanding to control the minds of women. Their activities are limited and mainly domestic and delicate.

स्त्रियों की सोच को समझना बहुत कठिन है, उनके कार्य और क्रिया-शक्ति सीमित है तथा उनकी सोच भी भावनात्मक होती है।

(ऋग्वेद, अष्टम मण्डल, श्लोक न० १७ / Rigveda, 8<sup>th</sup> Mandal, Verse No. 17)

A woman should always behave without any expression with forbidden persons. She should be without any style and a model of modesty. She should keep her body well covered, her exposed body will provoke carnal desires of the males. In this mantra, there is a good instruction for women.

स्त्री सदैव विनम्रता से आचरण करें, वह कभी उद्धत न हो, साथ ही लज्जा भाव का पूर्ण पालन करें। वह विनम्रता से चले। उसका शरीर पूर्णतः ढका रहे। जो स्त्रियां इन उपदेशों का पालन नहीं करतीं, वह पुरुषों की काम भावना को आमन्त्रित करती हैं। इस मन्त्र में स्त्रियों के लिए उत्तम उपदेश है।

(ऋग्वेद, अष्टम मण्डल, श्लोक न०-१६ / Rigveda, 8<sup>th</sup> Mandal, Verse No-19)

## लेखक नोट

सम्पूर्ण मानव जाति, जिसमें महिला और पुरुष दोनों शामिल हैं, धरती पर रहने वाले अन्य जीवित प्राणियों की तरह ही प्राणी है। अलबत्ता दोनों में कुछ जैविक और शारीरिक अंतर हैं, और इसी अंतर के लिए हमने इसका नाम कॉम्बो रखा है। मानव जाति इस धरती पर पाई जाने वाली सर्वश्रेष्ठ जाति है। इस धरती का संचालन करने वाली सबसे बड़ी ताकत, जिसे हम अल्लाह, भगवान या फिर गॉड के नाम से जानते हैं, की सबसे सुंदर रचना है। पवित्र कुरान और हदीस (पवित्र कुरान का विस्तार) वास्तव में एक नियमावली है जो हमें बताती है कि जीवन को परेशानी—मुक्त, उपयोगी, आरामदायक और संघर्ष—मुक्त बनाने के लिए इस मशीन का उपयोग कैसे करें। कॉम्बो की इन दो मशीनों में बहुत ही बारीक अंतर है। जब महिला और पुरुष के अधिकारों में तुलना की जाती है तो पुरुष इस अंतर का प्रयोग अपने निजी स्वार्थ के लिए करता है।



इस्लाम धर्म में महिलाओं के लिए जो न्यायशास्त्र तैयार किया गया है, वो महिलाओं के लिए प्रकृति द्वारा बनाए गए न्यायशास्त्र से प्रभावित है। लेकिन इस्लाम धर्म में अविश्वास रखने वाले लोग इस अंतर को अपनी आस्था, जिसे वो बिना किसी तर्क के मानते हैं, के आधार पर समझते हैं, और इस्लाम द्वारा बताए गए इस अंतर को समझने में विफल रहते हैं। प्रकृति ने महिला और पुरुष में ये अंतर क्यों किया है! इन दोनों की आवाजों में अंतर क्यों है? इन दोनों की शारीरिक संरचना और ताकत आदि में अंतर क्यों है? दोनों के बीच दाढ़ी, मूँछ का अंतर क्यों है? क्यों मर्द औरत की भाँति बच्चे पैदा नहीं कर सकता? क्यों मर्द बच्चों को औरत की तरह अपना दूध नहीं पिला सकता?

ऐसा लगता है कि प्रकृति ने अपनी संरचनाओं में क्षमताओं का बंटवारा बहुत अन्यायपूर्ण तरीके से किया है। धरती के कुछ हिस्से बिल्कुल वीरान हैं, तो कहीं हरियाली ही हरियाली है। सूरज अपनी रोशनी से चमकता है, तो चाँद सूरज की रोशनी पर निर्भर रहता है। धरती के कुछ हिस्से पूरी तरह बर्फ से ढके हैं तो कुछ बंजर रेगिस्तान हैं।

असल में इस्लाम धर्म प्रकृति के बनाए न्यायपूर्ण नियमों के आधार पर महिला और पुरुष में अंतर करता है। जिस प्रकार ईश्वर, अल्लाह, और गॉड ने धरती को पूरी तरह नहीं ढका है, उसी प्रकार मर्द और औरत के शरीर ढंकने में भी समानता नहीं रखी गई है।

क्या वास्तव में, प्रकृति ने ही मनुष्य की सोच को दूषित किया है? ठीक प्रकृति के आधार पर ही मानव ने सौंदर्य, विनम्रता, शालीनता, सुंदर, सभ्य—असभ्य, कोमल, कठोर आदि शब्दों को जन्म दिया है।

हम ये समझने में नाकाम रहते हैं कि इस्लाम में लैंगिक आधार पर समानता की बात कही गई है, न कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बराबरी की। इस्लाम धर्म में महिला और पुरुष दोनों को बराबर के अधिकार देने की बात कही गई है, लेकिन समान अधिकारों की गारंटी नहीं दी गई है। दुर्भाग्य से जो लोग इस्लाम धर्म के मानने वाले नहीं और न ही इस धर्म की शिक्षाओं से वाकिफ़ हैं वो इस धर्म को इस तरह पेश करते हैं जैसे कि ये धर्म महिलाओं पर अन्याय करने की शिक्षा देता है। इसके लिए बहुत हद तक ऐसे लोगों की इस धर्म के प्रति अशिक्षा और अनभिज्ञता जिम्मेदार है, और कुछ हद तक खुद मुसलमान भी जिम्मेदार हैं। ऐसे मुसलमान जो खुद इस्लाम धर्म की शिक्षा को सही तरीके से समझने में असमर्थ हैं लेकिन खुद को इस धर्म का ठेकेदार समझकर गलतबयानी करते हैं।

मर्द और औरत के अधिकारों के बीच असमानता को लेकर जिस तरह की आलोचनाएं की जाती हैं, उनमें से कुछ तो बहुत ही हास्यास्पद लगती हैं। जैसे— क्यों औरतों को अपना शरीर उस हद तक उजागर करने की इजाजत नहीं है जितना कि पुरुष को है। कुछ अंतर उनकी जैविक और भौतिक आवश्यकताओं के आधार पर आधारित होते हैं। लेकिन इसी अंतर को तथाकथित मॉडर्न समाज अपनी शारीरिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए भेदभाव बताता है, और इसी भेदभाव के नाम पर महिलाओं का शोषण करता है।

दुनिया-भर में, खास तौर से भारत में ज्यादातर इस्लाम धर्म को नहीं मानने वाले लोग गलत जानकारी रखते हैं। इस्लाम धर्म में मर्द और औरत के अधिकारों को लेकर जिस तरह की व्याख्या की गई है उसे सही रूप में लोग समझते ही नहीं। ये इस्लाम धर्म के प्रति किसी पूर्वाग्रह या गलत जानकारी की वजह से भी नहीं है, बल्कि खुद इस्लाम धर्म को मानने वाले मुसलमान भी इस धर्म की सही जानकारी पर अमल नहीं करते। वो खुद इस्लाम को पढ़कर और समझकर उस पर अमल नहीं करते, बल्कि आधी-अधूरी जानकारी वाले मुसलमानों से इस्लाम धर्म के बारे में सुनकर उस पर अमल करते हैं, और गैर-इस्लामी लोगों के सामने अपने उसी गलत इस्लाम को पेश कर अपने बारे में उनका नज़रिया बनाते हैं। इसके लिए सबसे ज्यादा इस्लाम के वो तथाकथित महाज्ञानी जिम्मेदार हैं, जो दावा करते हैं कि वो इस्लाम धर्म की रूह को समझते हैं, और सियासी फायदों के लिए इस्लाम की गलत छवि दुनिया के सामने रखते हैं।

कुछ ऐसी मज़हबी सियासी पार्टियां भी हैं, जो भारत के विभाजन को भी अपने लाभ के लिए उचित बताती हैं। उनकी टीआरपी उनके समर्थकों की संख्या के बल पर आधारित होती है। जो लोग बोलने में दक्ष होते हैं वो अपने शब्दों से ऐसे अनभिज्ञ लोगों को वरगलाने में कामयाब होते हैं। जबकि सच तो ये है कि ऐसे लोग बराबरी और समानता जैसे शब्दों के बीच अंतर करने में भी सक्षम नहीं होते।

आप जरा इस मिसाल पर गौर कीजिए! बच्चों के लिए ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो सिर्फ माँ कर सकती है, और कुछ को सिर्फ पिता ही कर सकता है। इस सूरत में दोनों की

जिम्मेदारियों को बराबरी के आधार पर आँका जाना चाहिए, और ये बराबरी इस आधार पर होनी चाहिए कि हम माँ और पिता में किसे ज़्यादा सम्मान देते हैं। अब इसी मिसाल को इस तरह से समझिए कि ये अंतर पुरुष और महिला को समानता के आधार पर दिया गया है। मर्द और औरत दोनों ही समान सम्मान, और मूल्यों के हकदार हैं। इस्लाम धर्म इन दोनों की इसी समानता की परिभाषा में विश्वास रखता है।

दोनों के बीच समानता की तुलना सही संभावनाओं में होनी चाहिए न कि इसे तार्किक रूप देकर समझा जाए। हम अपने पैगम्बर हज़रत सुलैमान के न्याय को कैसे आकेंगे जब दो महिलाएँ एक नवजात को अपना कहते हुए उनसे न्याय की गुहार लगाने उनके पास पहुँची थीं। हज़रत सुलैमान ने किस आधार पर न्यायपूर्ण बात कही, हज़रत सुलैमान ने उनके दावे को तार्किक आधार पर लिया, या फिर दोनों के न्यायसंगत दृष्टिकोण के आधार पर !

मेरे इस अध्ययन का मक़सद इस्लाम में बताए गए महिलाओं के अधिकारों को लेकर पैदा गलत जानकारीयों, व्याख्या और भ्रांतियों को दूर करना है। यह किताब महिलाओं के अधिकारों की पाँच सामान्य गलत जानकारीयों की व्याख्या करती है। जैसे उनकी आध्यात्मिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, बौद्धिक स्थिति और हिजाब आदि।

### *इसके बारे में एक न्यायाधीश की तरह सोचिए!*

मैं, श्री शकीलुल्लाह खान साहब (सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली) और प्रो० अरविंद कुमार (सेवानिवृत्त, हिंदी विभाग प्रमुख, एन० एन० कॉलेज, बिहार विश्वविद्यालय, बिहार) का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने मेरे इस प्रयास (पुस्तक) "इस्लाम में महिलाओं के अधिकार: समान या बराबर" को सराहा और अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान किये और इसे पुस्तक के रूप में पढ़ने योग्य बनाया। ईश्वर उन सभी पर कृपा करें।

Abu Hurairah Narrated that The Messenger of Allah said: "The most complete of the believers in faith, is the one with the best character among them. And the

best of you are those who are best to your women.

(Prophet Muhammad (PBUH) Jami' at- Tirmidhi 1162)

ईमान में सबसे विश्वासी व्यक्ति वह है, जिसकी नैतिकता सबसे अच्छी है,

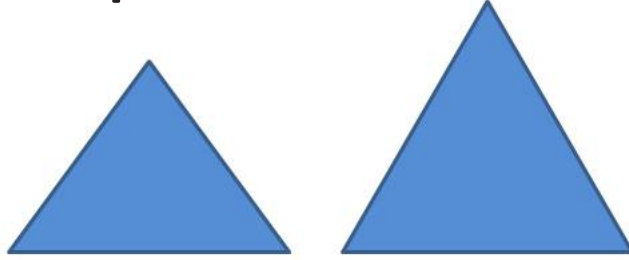
और तुम में से सबसे अच्छा व्यक्ति वह है

जो अपनी औरतों के लिए सबसे अच्छा है।“

( पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) - तिर्मिज़ि - ११६२)

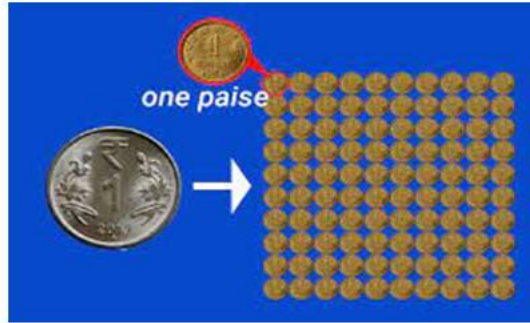


इस्लाम में महिलाओं के अधिकार  
**समान या बराबर ?**  
Rights of women in Islam  
**Equal or Similar ?**



Similarity has traits characteristics in common  
and equality is the same in all respect.

समानता में लक्षण या गुण समान होते हैं,  
बराबरी में सब कुछ हर हालत में बराबर होता है



M. T. Kaifi

### विषय सूची

⇒ इस्लाम में महिलाओं के साथ सुलूक	11
⇒ दोनों को समान या एक जैसे अधिकार प्रदान करना बड़ा अन्याय है	13
⇒ मुस्लिम महिलाओं की आध्यात्मिक स्थिति	15
⇒ मुस्लिम महिलाओं की बौद्धिक स्थिति	15
⇒ मुस्लिम महिलाओं की आर्थिक स्थिति	17
⇒ मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक स्थिति	17
● बेटी	17
● पत्नी	19
● माँ	19
⇒ हिजाब	19
⇒ आज के दौर में मुस्लिम महिलाओं की भूमिका	23
⇒ परिवार के सदस्यों की आर्थिक और नैतिक जिम्मेदारियाँ	25

### Looks Naked Even Dressed

The women who would be dressed but appear to be naked, who would be inclined (to evil) and make their husbands incline towards it. Their heads would be like the humps of the bukht camel inclined to one side. They will not enter Paradise and they would not smell its odor whereas its odor would be smelt from such and such distance.

### कपड़े पहनें हुए भी नग्न दिखती हैं

जो औरतें कपड़े पहनती हैं लेकिन नग्न दिखाई देती हैं, जो बुराई की ओर झुकी होती हैं और अपने पति को भी उसकी ओर झुकाती हैं। उनके सिर एक तरफ झुके हुए ऊँट के कूबड़ के समान होंगे। वे जन्नत में प्रवेश नहीं करेंगी और वे इसकी (जन्नत) सुगन्ध भी नहीं सूंघ पाएँगी, जबकि इसकी (जन्नत) सुगन्ध बहुत दूर से सूंघी जा सकती है।

Prophet Muhammad (pbuh) / पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०)

## क्या इस्लाम में महिलाओं के अधिकार पुरुषों के बराबर या समान हैं ?

महिलाओं के साथ सुलूक के सिलसिले में इस्लामी शिक्षा सबसे ज़्यादा गलतफ़हमी का शिकार है । पश्चिमी दुनिया आम तौर पर मुस्लिम महिलाओं को दमित और अपने अधिकारों से वंचित के रूप में देखती है। मीडिया रूढ़ीवादी मुस्लिम महिला का चित्रण पूरी तरह ढकी हुई और अपने पति की अधीन के रूप करती है, जिसकी हैसियत एक गुलाम से थोड़ी ज़्यादा है। लेकिन ऐतिहासिक तथ्य यह है कि 1450 वर्षों से मुस्लिम महिलाओं को वे अधिकार हासिल हैं जिनके लिए पश्चिमी महिलाएं अभी भी संघर्ष कर रही हैं।

इस्लाम एक सामाजिक प्रणाली प्रदान करता है जो प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों और जिम्मेदारियों को तय करता है। यह प्रणाली पुरुषों और महिलाओं की भूमिका और स्थिति में एक संतुलन प्रदान करती है, इस प्रकार महिलाओं की स्थिति को पुरुषों के साथ एक समान पायदान पर रखती है। ऐसा समाज वास्तव में पैगंबर मुहम्मद (सल0) ने 1450 साल पहले पवित्र कुरान में मौजूद अल्लाह के मार्गदर्शन के ज़रिए से बनाया था।

आइए हम उन अधिकारों की जाँच करें जो मुस्लिम महिलाओं को हासिल हैं और साथ ही साथ हम दूसरी महिलाओं के मुद्दे और समाज में उनके स्थान की भी जाँच करेंगे।

☞> **इस्लाम में महिलाओं के साथ सुलूक:** यह समझना महत्वपूर्ण है कि इस्लाम के आगमन से पहले महिलाओं की स्थिति क्या थी। इस्लाम से पहले अरब में, और बाकी दुनिया में, उनकी स्थिति गुलामों के बराबर थी और उन्हें पुरुषों की निजी संपत्ति माना जाता था, जिनके पास कोई अधिकार नहीं होता था। महिलाओं के पास न तो संपत्ति हो सकती थी और न ही वे संपत्ति की उत्तराधिकारी बन सकती थीं। घरेलू मामलों में, उन्हें अपने बच्चों या खुद पर कोई अधिकार नहीं था, उनके पति उन्हें अपनी इच्छानुसार बेच सकते थे या छोड़ सकते थे। यदि उनके साथ उनके पतियों द्वारा दुर्व्यवहार किया गया, तो उनके पास तलाक़ लेने के लिए कोई उपाय नहीं था। समाज में उनकी कोई वास्तविक स्थिति नहीं थी और न ही उन्हें पत्नी, माँ या बेटी के रूप में सम्मान दिया जाता था। वास्तव में, बेटियों को बेकार माना जाता था और अक्सर उन्हें जन्म के समय ही मार दिया जाता था। महिलाओं को बहुत कम या बिल्कुल शिक्षा नहीं दी जाती थी, और उन्हें

## THE INTOXICATION CAUSED BY



'Haram' love between the two is like that wine which deprives them of the sense of right and wrong.

दो व्यक्तियों के बीच हराम (वर्जित) प्रेम ऐसा नशा है जो दोनों को जाएज़ (उचित) और नाजायज़ (अनुचित) सम्बन्धों के बीच अंतर को समझने की शक्ति को छीन लेता है।



'Halal' love is like that divine wine which brews in the eyes of the lovers & the intoxication caused by it make them reject every other kind of wine.

अवर्जित (हलाल) नशा प्रेमियों की आँखों में होता है और उस नशे में वे किसी अन्य नशे से प्रभावित नहीं हो सकते।

and  
the

Muhammad T. Kaifi  
मुहम्मद टी कैफ़ी

आध्यात्मिकता और बुद्धि में कम मान कर धार्मिक मामलों में उनको कोई अहमियत नहीं दी जाती थी।

ये अपमानजनक स्थितियाँ उन्नीसवीं सदी में दुनिया के अधिकांश हिस्सों में, यहाँ तक कि संयुक्त राज्य अमेरिका में भी अच्छी तरह से मौजूद थीं, जहाँ केवल बीसवीं सदी की शुरुआत में महिलाओं को कुछ बुनियादी अधिकार दिए गए थे। **लेकिन अरब में, छठी सदी में, इस्लाम के आगमन के साथ महिलाओं की स्थिति नाटकीय रूप से बदल गई। लगभग रातोंरात, महिलाओं को समान अधिकार दिए गए और पुरुषों के साथ एक ही स्तर पर रखा गया।** पवित्र कुरान में, अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट किया है कि उसने पुरुषों और महिलाओं को एक जैसे प्राणी की तरह बनाया है। वह कहता है: **“उसने तुम्हें एक जान से पैदा किया फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया।”** (पवित्र कुरान— 39: 7)

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने खुद अल्लाह की आज्ञाओं का पालन किया और महिलाओं के साथ बहुत ही सम्मान, दया और इज़्ज़त के साथ सुलूक किया। इस्लाम ने पुरुषों और महिलाओं के अधिकारों के बीच अंतर करते हुए कई कारकों को ध्यान में रखा है। इन अधिकारों की मात्रा समान है लेकिन समरूप (एक जैसी) नहीं है। **विवाद तब शुरू होता है जब हम समानता और समरूपता के बीच अंतर नहीं कर पाते।**

इस्लाम ने दोनों को समान स्तर प्रदान किया है और दोनों को ऐसे अधिकार दिए हैं जो उनके लिए उपयुक्त हैं और जिनका उपयोग करने में वे शारीरिक, जैविक, आध्यात्मिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से सक्षम हैं। महिलाएँ नाजुक होती हैं और उन्हें बहुत सावधानी से संभालना पड़ता है। उनके साथ कोई भी ग़लत सुलूक उन्हें नुकसान पहुँचाता है और उनको नुकसान पहुँचाने से पूरे समाज को नुकसान पहुँचता है। यह विरोधाभासी लग सकता है कि उनकी नाजुकता उन्हें कमज़ोर नहीं बनाती है। क्या हम इस बात से इंकार कर सकते हैं कि 'जननी जन्मदायिनी और विश्वविधायिनी है'?

➤ **वास्तव में दोनों को समान या एक जैसे अधिकार प्रदान करना बड़ा अन्याय होगा:** इस्लाम के आगमन से पूर्व स्त्रियों की पीड़ा का कारण वास्तव में यह था कि स्त्रियों से भी, अप्रत्यक्ष रूप से, मर्दों की तरह काम करने की आशा की जाती थी जो कि शारीरिक रूप से संभव नहीं था। उन्हें ऐसी वस्तुओं की तरह माना जाता था जो अनुपयोगी हो जाने पर फेंक दी जाती हैं। पुरुष उन्हें केवल दैहिक आनंद की वस्तु के रूप में मानता था। सौंदर्य के प्रति आकर्षण एक प्राकृतिक घटना है जो सभी जीवित प्राणियों में पाया जाता है। यौन सौंदर्य उन सब में प्रमुख है। इस्लाम ने इस आकर्षण को मनुष्य के बीच सभ्य सीमा में रखने के लिए कुछ रास्ते बताए हैं। सुंदरता का आकर्षण सबसे मुश्किल चीज़ होती है जिसका मुकाबला किया जाए और इसलिए यह कहना बिल्कुल सही है कि **'सौंदर्य सोने की तुलना में जल्द चोरों को उकसाती है'** समाज की सलामती और सुरक्षा

## SOLEMNITY &amp; DIGNITY OF MARRIAGE

## विवाह की पवित्रता और गरिमा

A man divorced his wife and she married another man who because of lack of his manhood divorced her. She came to the Prophet Mohammad (PBUH) and said, "O Allah's Messenger! My first husband divorced me and then I married another man who could not consummate his marriage because of his imperfect manhood. Can I remarry my first husband again in this case? Allah's Messenger said It is unlawful to marry your first husband till some other people consummate his marriage with you after marrying you.

एक आदमी ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया और उसने दूसरे आदमी से शादी कर ली, जिसने अपनी मर्दानगी की कमी के कारण उसे तलाक दे दिया। वह पैगंबर मोहम्मद (सल्ल०) के पास आई और कहा, "हे अल्लाह के रसूल! मेरे पहले पति ने मुझे तलाक दे दिया और फिर मैंने एक और आदमी से शादी कर ली, जो अपनी अपूर्ण मर्दानगी के कारण अपनी शादी को पूरा नहीं कर सका। क्या मैं अपने पहले पति से दोबारा शादी कर सकती हूँ। अल्लाह के रसूल ने फरमाया कि अपने पहले पति से तब तक शादी करना अवैध है जब तक कि कोई और आपसे शादी करने के बाद आपको अपनी मर्जी से तलाक न दे दे।

**Hazrat Aisha (R A) / हज़रत आयशा (रजि०)**

के लिए यह बेहद जरूरी है कि पुरुष और महिलाएँ एक-दूसरे से दूर रहें। महिलाएँ स्वभाव से सीधी और भोली होती हैं और शोषण का शिकार होती हैं लेकिन पुरुष स्वभाव से अवसरवादी होता है और शोषण पसंद करता है। एक महिला की मातृसुलभ प्रवृत्ति उसे विभिन्न प्रकार के शोषण का शिकार बनाती है।

☞> **मुस्लिम महिलाओं की आध्यात्मिक स्थिति:** इस्लाम में महिलाओं की आध्यात्मिक स्थिति किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं है। महिलाओं के लिए इस्लाम ने जो सबसे महत्वपूर्ण बदलाव लाया है, वह यह है कि उसने उनकी आध्यात्मिक स्थिति को बढ़ाया है। अल्लाह ने पवित्र कुरान में स्पष्ट रूप से घोषणा की है कि महिलाओं में पुरुषों के समान आध्यात्मिक क्षमता है, और वे अपने स्वयं के प्रयासों से समान आध्यात्मिक पुरस्कार प्राप्त कर सकती हैं। पवित्र कुरान कहता है: “किन्तु जो अच्छे कर्म करेगा, चाहे पुरुष हो या स्त्री, यदि वह ईमानवाला है तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे।” पवित्र कुरान— 4: 125

पवित्र कुरान बार-बार कई आयतों में पुरुष और महिला दोनों को संबोधित करके इस समानता पर जोर देता है। वह महिलाओं के आध्यात्मिक स्तर पर कोई संदेह नहीं करता है। वह कहता है: “निश्चित रूप से मुस्लिम पुरुष और मुस्लिम स्त्रियाँ, ईमानवाले पुरुष और ईमानवाली स्त्रियाँ, निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाले पुरुष और निष्ठापूर्वक आज्ञापालन करनेवाली स्त्रियाँ (इनके लिए अल्लाह ने क्षमा और बड़ा प्रतिदान तैयार कर रखा है)।” पवित्र कुरान – 33:36

☞> **मुस्लिम महिलाओं की बौद्धिक स्थिति:** इस्लाम इस बात पर जोर देता है कि पुरुषों और महिलाओं के लिए शिक्षा का समान महत्व है, और “ज्ञान प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष और महिला का कर्तव्य है।” पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दोनों को प्रेरित किया है कि “ज्ञान प्राप्त करो भले ही आपको चीन जाना पड़े,” और “पालने से कब्र तक ज्ञान प्राप्त करो”। ज्ञान हमें विचार करने के लिए सक्षम बनाता है और केवल वही लोग जो विचार करते हैं, अल्लाह की निशानियों को समझ सकते हैं और उसके सबसे ज़्यादा करीब आ सकते हैं। कुरान हमें एक छोटी प्रार्थना सिखाता है: “हे मेरे प्रभु, मुझे ज्ञान में वृद्धि कर।” कुरान— 20: 115

पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने अपनी पत्नियों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया और एक बार कहा था कि “इस्लाम धर्म का आधा हिस्सा हज़रत आयशा (उनकी पत्नी) से सीखा जा सकता है।” दरअसल, उनकी मृत्यु के बाद पूरे मुस्लिम समुदाय उनकी पत्नियों की सलाह चाहते थे। आजकल आप मुस्लिम महिलाओं को कई पेशों में सक्रिय देखेंगे, जैसे कि चिकित्सा, नर्सिंग और शिक्षण। यहाँ यह जानना रूचिकर होगा कि जिस समय इस्लाम ने महिलाओं के लिए जागृति लाई थी, यूरोप में किसी भी तरह का ज्ञान का प्रदर्शन करने वाली महिला को जलाए जाने का



### Family Status Of Women In Islam

## Marriage

“And among His signs is this: that He created mates for you from yourselves that you may find rest and peace of mind in them, and He ordained between you Love and Mercy.

Certainly, herein indeed are signs for people who reflect.”

(Holy Qur'an 30:21)

इस्लाम में महिलाओं की पारिवारिक स्थिति

## शादी

“और उसकी निशानियों में से यह है कि “उसने तुममें से तुम्हारे लिए साथी बनाए कि तुम उनमें आराम और मन की शांति पाओ, और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया को मुकर्रर किया। यकीनन ऐसे लोग हैं जिनमें ये खासियत पाई जाती है।”

(पवित्र कुरान 30:21)

खतरा था। इसके अलावा, अधिकांश विश्वविद्यालय, यहाँ तक कि अमरीका में भी, महिलाओं को इस शताब्दी तक उच्च शिक्षा प्राप्त करने नहीं देते थे।

☞ **मुस्लिम महिलाओं की आर्थिक स्थिति:** पवित्र कुरान कहता है: “पुरुषों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है और स्त्रियों ने जो कुछ कमाया है, उसके अनुसार उनका हिस्सा है। अल्लाह से उसका उदार दान चाहो। निस्संदेह अल्लाह को हर चीज़ का ज्ञान है।” पवित्र कुरान— 4:33

इन आयतों ने, जहाँ तक उनके कार्यों का संबंध है, स्त्री-पुरुषों की समानता को स्थापित किया है। एक विवाहित महिला को अपने स्वयं के धन से खर्च करने की भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह उसके पति का कर्तव्य है कि अपनी पत्नी की आवश्यकताओं को पूरा करे।

इस्लाम पति को विवाह के समय अपनी पत्नी को दहेज (मेहर) देने का आदेश देता है और इस तरह एक महिला की आर्थिक स्थिति को और अधिक सुरक्षित बना दिया। पवित्र कुरान 4:5 में कहा गया है: “और स्त्रियों को उनके मेहर खुशी से अदा करो। हाँ, यदि वे अपनी खुशी से उसमें से तुम्हारे लिए छोड़ दें तो उसे तुम अच्छा और पाक समझकर खाओ।” दिलचस्प बात यह है कि इसमें न केवल पति को बल्कि महिला के रिश्तेदारों को भी संबोधित किया गया है। उनका इस दहेज पर कोई अधिकार नहीं है।

अंत में, इस्लाम ने महिला को विरासत का अधिकार दिया है। पवित्र कुरान ने स्पष्ट किया है कि: “और स्त्रियों का भी उस माल में एक हिस्सा है जो माल माँ-बाप और नातेदारों ने छोड़ा हो – चाहे वह थोड़ा हो या अधिक हो – यह हिस्सा निश्चित किया हुआ है।” पवित्र कुरान— 4: 8

☞ **मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक स्थिति :** इस्लाम के आगमन के साथ ही महिलाओं की सामाजिक स्थिति नाटकीय रूप से बदल गई। पवित्र कुरान और पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने महिलाओं के साथ बेटी, पत्नी और माँ की हैसियत से सुलूक के लिए स्पष्ट मार्गदर्शन दिया है।

**१ बेटी:** इस्लाम के पूर्व अपमान या गरीबी के डर से जन्म के समय शिशु लड़कियों को मारने की प्रथा को इस्लाम ने पूरी तरह से समाप्त कर दिया है। पवित्र कुरान में अल्लाह कहता है: “निर्धनता के कारण अपनी सन्तान की हत्या न करो, हम तुम्हें भी रोज़ी देते हैं और उन्हें भी। और अश्लील बातों के निकट न जाओ, चाहे वे खुली हुई हों या छिपी हुई हों।” पवित्र कुरान – 6: 152

बच्चों की हत्या से मना करने के बाद, इस्लाम ने एक पिता को यह शिक्षा दी है कि वह अपनी बेटियों की उसी तरह परवरिश करे जिस तरह वह अपने बेटों की परवरिश करता

### इस्लाम में महिलाओं की स्थिति

## माँ

और हमने मर्दों को हुक्म दिया कि अपने माँ-बाप के साथ अच्छा बरताव करें। उसे पैदा करने में माँ बहुत तकलीफ उठाती है। मुश्किलों के साथ उसकी परवरिश करती है।

(पवित्र कुरान 46:15)

## बेटी

अपनी बेटियों के साथ हमदर्दी से पेश आओ। बेटियाँ ही उन्हें जहन्नुम की आग से बचाने में मददगार होंगी।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०)

## शादी

और उसकी निशानियों में से एक ये भी है कि उसने अपने में से तुम्हारे लिए साथी पैदा किए ताकि तुम्हें उन साथियों में सुकून और मन की शांति पाओ। दया और प्यार मिले। यकीनन ऐसे लोग हैं जिनमें ये खासियत पाई जाती है।

(पवित्र कुरान 30:21)

है। वास्तव में, एक बेटी की अच्छी देखभाल करने से एक मुसलमान के लिए स्वर्ग का द्वार खुल जाता है। पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा : “जो आदमी दो लड़कियों का पालन-पोषण करता है और उन्हें अच्छे संस्कार देता है तो वह क़यामत के दिन मेरे साथ इस तरह होगा जिस तरह एक हाथ की दो उंगलियां होती हैं।

**२. पत्नी:** इस्लाम ने पत्नी की भूमिका को सभी स्तरों पर बदल दिया है – एक नौकर से थोड़ी अधिक हैसियत होने से लेकर अपने पति के बराबर होने की हैसियत तक। पवित्र कुरान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि विवाह में महिलाओं के अधिकार पुरुषों के समान हैं। विवाह दो आत्माओं का एक सामंजस्यपूर्ण मिलन है। विवाह का उद्देश्य एक दूसरे से आराम हासिल करना है। पवित्र कुरान ने खूबसूरती से इस आयत के जरिए इस रिश्ते की समानता को परिभाषित किया है: “वे तुम्हारे परिधान (लिबास) हैं और तुम उनका परिधान हो।” पवित्र कुरान – 2:188। इस्लाम में यह भी शिक्षा दी गई है कि महिला के साथ दया और उदारता का सुलूक किया जाए और विवाह और तलाक़ में उसे समान अधिकार दिए जाएँ। बहुत ही आवश्यक होने पर इस्लाम उसे तलाक़ लेने की अनुमति देता है।

**३. माँ:** माँ की हैसियत से एक मुस्लिम महिला अपनी सर्वोच्च सामाजिक स्थिति को प्राप्त करती है। पवित्र कुरान बार-बार मुसलमानों को निर्देश देता है कि वे अपने माँ-बाप की, विशेषकर अपनी माँ की देखभाल करें।

पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने माँ के साथ प्यार और सम्मान से पेश आने पर यह कहते हुए जोर दिया है कि: “स्वर्ग माता के चरणों में है।” एक दूसरी हदीस में, चार बार पूछने पर कि एक व्यक्ति को किस के साथ दयालु होना चाहिए: तीन बार उन्होंने (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कहा – “तुम्हारी माँ के साथ।” केवल चौथी बार पूछे जाने पर उन्होंने जवाब दिया: “तुम्हारे पिता के साथ।” ये हदीसों इस बात पर जोर देती हैं कि एक मुसलमान के लिए अपनी माँ की देखभाल करना कितना महत्वपूर्ण है।

➤ **हिजाब:** हिजाब और दोनों लिंगों के पृथक्करण के विषय में इस्लाम की शिक्षाएँ शायद पश्चिमी समाज में सबसे अधिक ग़लतफ़हमी का शिकार हैं। इसका कारण यह व्यापक और ग़लत धारणा है कि हिजाब के कारण मुस्लिम महिलाओं पर भारी प्रतिबंध लागू होता है। जबकि सच इसका उल्टा है। आप पाएँगे कि हिजाब महिलाओं की सुरक्षा और उन्हें कई तरह की सामाजिक बुराइयों से मुक्ति प्रदान करने का एक साधन है। हिजाब की अवधारणा और प्रक्रिया को दर्शाने के लिए “पर्दा” शब्द का भी प्रयोग किया जाता है।

इस्लाम न केवल व्यक्तियों के लिये मार्गदर्शन प्रदान करता है अपितु समाज की भलाई के लिये भी नियम निर्धारित करता है। हिजाब समाज की नैतिक स्थिति की रक्षा करता है। मुस्लिम महिलाएँ भी पुरुषों के साथ समाज के नैतिक स्तर को कायम रखने की

### Characteristics of Jannati Women

#### जन्नती महिलाओं की विशेषताएं

Hazrat Aisha (R A) was asked,  
"Which type of woman is best?"

She (R A) replied,

*The one who does not know about saying bad things,  
She is not crafty like men, and her focus is on adorning herself for  
her husband and taking care of her family."*

हज़रत आयशा (रज़ि०) से पूछा गया,  
किस प्रकार की महिला सबसे अच्छी है?  
उन्होंने (रज़ि०) उत्तर दिया,  
जो बुरी बातें कहना नहीं जानती,  
वह पुरुषों की तरह चालाक नहीं है, और उसका ध्यान अपने पति के लिए  
खुद को सजाने और अपने परिवार की देखभाल करने पर है। "

हज़रत आयशा (रज़ि)

ज़िम्मेदारी निभाती हैं। पवित्र कुरान की आयत नम्बर 24:31 में कहा गया है: “ईमानवाले पुरुषों से कह दो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यही उनके लिए अधिक अच्छी बात है। अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर रहती है, जो कुछ वे किया करते हैं। फिर आगे आयत 24:32 में कहा गया है, “और ईमानवाली स्त्रियों से कह दो कि वे भी अपनी निगाहें बचाकर रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। और अपने श्रृंगार प्रकट न करें, सिवाय उसके जो उनमें खुला रहता है। और अपने सीनों (वक्षस्थलों) पर अपने दुपट्टे डाले रहें।” इन आयतों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि स्त्री और पुरुष दोनों ही को हमेशा लज्जा (शालीनता) और शिष्टाचार के साथ आचरण करना चाहिए, विशेष रूप से एक-दूसरे की उपस्थिति में। यह शिक्षण इस तथ्य पर आधारित है कि इस्लाम मानता है कि “रोकथाम इलाज से बेहतर है।” स्त्री-पुरुष का पृथक्करण (Segregation of the sexes) ऐसी परिस्थितियों की रोकथाम के लिए जरूरी हो जाता है जो समाज के नैतिक मूल्यों को नष्ट कर सकती हैं और यह समाज को व्यभिचार, किशोर गर्भधारण और यौन संचारित रोग जैसे समस्याओं से बचाता है।

पवित्र कुरान मुस्लिम महिलाओं को आदेश देता है कि वे शालीन कपड़े पहनें, अपने सिर को ढ़कें और अजनबियों से अपनी सुंदरता को छुपाने के लिए एक बाहरी परिधान पहनें। हालांकि, सही और पूर्ण हिजाब का पालन तब होता है जब “पर्दा” एक पुरुष या महिला के मन और हृदय में भी हो। इसका मतलब यह है कि इंसान को विपरीत लिंग के संपर्क में आने पर अपने मन और हृदय को अशुद्ध और अनैतिक विचारों से बचाना चाहिए। इससे पुरुष और महिलाएँ एक-दूसरे के साथ सम्मान और समझ-बूझ से पेश आएंगे।

पवित्र कुरान की एक और आयत में कहा गया है: “ऐ नबी! अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और ईमानवाली स्त्रियों से कह दो कि वे अपने ऊपर अपनी चादरों का कुछ हिस्सा लटका लिया करें। इससे इस बात की अधिक सम्भावना है कि वे पहचान ली जाएँ और सताई न जाएँ। अल्लाह बड़ा क्षमाशील, दयावान है।” पवित्र कुरान— 33:60

हिजाब मुस्लिम महिलाओं को कुछ ऐसी समस्याओं से मुक्ति दिलाता है जो आज महिलाएँ सामना कर रही हैं। इस्लाम में महिला को “सेक्स ऑब्जेक्ट” के रूप में नहीं देखा जाता है, और न ही अपमानित ढंग से उसका शोषण या परेशान किया जाता है।

इस्लाम ने निस्संदेह रूप से हिजाब के माध्यम से महिला को गरिमा और सम्मान दिया है। हिजाब की प्रथा का पालन करने वाली मुस्लिम महिलाएँ खुद के साथ अधिक आराम और सहजता महसूस करती हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस्लाम ने आत्म-सम्मान के निशान के रूप में शारीरिक दिखावट के महत्व को कम कर दिया है। एक मुस्लिम महिला अपने अंदर अन्य प्रतिभाओं को विकसित करने के लिए स्वतंत्र है, और जो वह चाहती है उसे प्राप्त करने के लिए उसे अपनी शारीरिक सुंदरता पर भरोसा करने की जरूरत नहीं है।

**Don't Stay in a Haram Relationships**

हराम के रिश्तों में न रहें

Don't live with the opposite sex in Haram relationship i.e. without solemnizing the process of marriage. Don't stay in Haram relationships with the intention of making it Halal someday. Who has promised to keep you alive till tomorrow?

हराम रिश्ते में विपरीत लिंग के साथ न रहें यानी शादी की प्रक्रिया को पूरी किए बिना। किसी दिन इसे हलाल बनाने के इरादे से हराम के रिश्तों में न रहें। कल का तुमसे किसने वादा किया था?

**M. T. Kaifi / एम० टी० कैफी**

➤ **आज के दौर में मुस्लिम महिलाओं की भूमिका:** इस अध्याय में मुस्लिम महिलाओं को समाज में जो हैसियत हासिल है और जो अधिकार उन्हें इस्लाम द्वारा दिए गए हैं, इस बारे में आप को आभास देने का प्रयास किया गया है। मुस्लिम महिलाओं के पास वे सभी अधिकार हैं जो मुस्लिम पुरुषों के पास हैं, और कुछ मायनों में उन्हें कुछ विशेषाधिकार भी प्राप्त हैं जो पुरुषों को प्राप्त नहीं हैं।

जरूरत पड़ने पर उसे बाहर जाने और काम करने का अधिकार है, लेकिन वह गृहस्थी की आर्थिक जिम्मेदारी उठाने को बाध्य नहीं है। उसे अपने स्वयं की और बाद में अपनी संतान की उन्नति के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

समाज में महिलाओं की भूमिका के बारे में कुछ ग़लत धारणाएँ प्रचलित हैं। क्योंकि, दुर्भाग्य से, कुछ "मुस्लिम" देश पवित्र कुरान की शिक्षाओं का पालन नहीं करते।

कुछ लोग सवाल कर सकते हैं कि **इस्लाम में महिला को रोजगार के लिए समान अधिकार प्राप्त करने की अनुमति क्यों नहीं है!**

इसका उत्तर है: **एक महिला ऐसे काम नहीं कर सकती जो उसके शरीर का शोषण करने वाले हैं, जैसे मॉडलिंग, फिल्म में अभिनय। हम चाहते हैं कि हमारी महिलाओं का सम्मान किया जाए।** कुछ नौकरियाँ वास्तव में महिला के शरीर के शोषण, उसको उसके सम्मान से वंचित करने और उसकी आत्मा के पतन ही के लिए हैं।

महिला को ऊपर उठाने का दावा करने वाले पश्चिमी समाज ने वास्तव में उसके स्तर को नीचे गिराया है, उसे एक उपपत्नी, रखैल और समाज की तितलियाँ बनाकर रख दिया है, जो कला और संस्कृति के रंगीन परदे के पीछे छिपी है। जबकि शालीनता को अपनाना एक धार्मिक आदेश है।

हालांकि, एक महिला को गैर-महिला वातावरण में तब तक काम नहीं करना चाहिए जब तक वह ऐसा करने के लिए बहुत ही विवश न हो। यदि किसी महिला को काम करना ही हो तो उसके लिए अनेक स्पष्ट दिशा-निर्देश दिये गये हैं जिनका पालन किया जाना चाहिए: विभिन्न चिकित्सा क्षेत्रों में, शिक्षा के क्षेत्र में, सामाजिक कार्य, परामर्श, मनोविज्ञान, मनोचिकित्सा और चाइल्डकैअर जैसे पेशों की मदद करने में मुस्लिम महिलाओं की अत्यधिक आवश्यकता है। प्रौद्योगिकी और संचार क्षमताओं के विकास के साथ, महिलाओं के लिए घर से कुछ प्रकार के कार्य या व्यवसाय करने के लिए असीमित अवसर हैं (जैसे कि सचिवीय कार्य और टाइपिंग लेखन, संपादन, प्रकाशन और कंप्यूटर का काम, आदि)। यह एक आदर्श स्थिति होगी जो कामकाजी महिलाओं की अनेक चिंताओं को दूर कर सकती है।

**प्रसिद्ध अंग्रेजी लेखिका लेडी कुक, न्यू इको (New Echo) में कहती हैं: "पुरुष मिश्रित वातावरण को पसंद करते हैं (और तरजीह देते हैं)। सह-शिक्षा का माहौल (पुरुष और**



### The Real Love

A very old man feeds his wife every morning when he visits her at the Nursing Home. She hasn't recognized him since last 5 years due to her Alzheimer's, when he was asked, "if she doesn't recognize who you are, why do you feed her?"

The old man smiled and said, "She doesn't know who I am, but I know who she is!"

एक बहुत बूढ़ा आदमी हर सुबह अपनी पत्नी को खाना खिलाने नर्सिंग होम जाता है। अल्जाइमर के कारण उसकी पत्नी ने पिछले 5 वर्षों से उसे नहीं पहचाना, जब उस बूढ़े आदमी से पूछा गया, जब आपकी पत्नी आपको नहीं पहचानती कि आप कौन हैं, तो आप उसे खाना क्यों खिलाते हैं? वह बूढ़ा मुस्कुराया और कहा, वह नहीं पहचानती कि मैं कौन हूँ, लेकिन मुझे पता है कि वह कौन है!



*महिला के बीच) जितना अधिक होगा, समाज में उतने ही नाजायज बच्चे होंगे।*

जो काम एक महिला अपने घर के बाहर करती है, वह सबसे पहले, एक वैध रोजगार होना चाहिए या ऐसी नौकरी होनी चाहिए जो महिला की प्रकृति और शरीर के अनुरूप हो। उदाहरण के लिए, उसे भारी औद्योगिक कार्य करने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए, तथा दूसरे ऐसे कार्य करने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए जिन्हें करने के लिए पुरुष अधिक उपयुक्त हैं।

*यहाँ सवाल यह है: एक महिला को काम क्यों करना पड़ता है ?* क्या वह अपने खुद के जीवन—यापन के खर्च के लिए काम करती है। इस्लाम ने इस कर्तव्य से उसे मुक्त कर दिया है, जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, कि परिवार के पुरुष सदस्यों को पूरी वित्तीय जरूरतों और दायित्वों का ध्यान रखना होगा। इस प्रकार, उसके जन्म से मृत्यु तक, जीवन के विभिन्न चरणों में उसे कोई काम करने की जरूरत नहीं। इस प्रकार इस्लाम घर की देखभाल और बच्चों की परवरिश करने के स्त्री के सबसे अहम मिशन और कर्तव्य को गरिमा और एकाग्रता प्रदान करता है।

*अंग्रेजी पुनर्जागरण के स्तंभों में से एक प्रसिद्ध अंग्रेजी विद्वान सैमुअल स्माइल्स कहते हैं: “वह प्रणाली जिसने महिलाओं को कारखानों और औद्योगिक क्षेत्रों में काम करना आवश्यक बना दिया है, उसने पारिवारिक जीवन को नष्ट कर दिया है। इसने वास्तव में, घर की मूल संरचना और नींव पर हमला किया है और परिवार के महत्वपूर्ण स्तंभों को नष्ट कर दिया है। इसने सामाजिक संबंधों को भी काट दिया और नष्ट कर दिया है। एक महिला का असली काम और पेशा एक स्वस्थ, मजबूत और नैतिक मूल्यों पर आधारित परिवार की परवरिश करना है।*

☞ *परिवार के सदस्यों की आर्थिक और नैतिक जिम्मेदारियाँ:* पुरुषों के प्राकृतिक, शारीरिक और सामाजिक गुण, मजबूत लिंग होने के नाते, मांग करते हैं कि वे ऐसी जिम्मेदारियों को संभालें जो मासिक धर्म, गर्भावस्था, बच्चों का लालन—पालन और शुरुआती प्रसव के बोझ से मुक्त हों। महिला शारीरिक रूप से कमजोर लिंग हैं, वे बच्चों को जनम देने वाली और गृहिणी के रूप में अपनी भूमिका को निभाने के लिए जैविक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से बनाई गई हैं। उनमें अंतर्दृष्टि और भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक होती है। मासिक धर्म, गर्भावस्था, प्रसव, और बच्चे की परवरिश और देखभाल के दर्द और बोझ के कारण महिलाओं को अक्सर विश्राम के लिए कई अवधियों की तन्हाइयों की आवश्यकता होती है, और उन्हें परिवार के भरण—पोषण और रख—रखाव के लिए अतिरिक्त वित्तीय और पेशेवराना जिम्मेदारियाँ संभालने की जरूरत नहीं है। ये सभी चिंताएं एक महिला की मानसिक स्थिति को प्रभावित करती हैं और उसके जीवन, दृष्टिकोण और व्यवहार में परिलक्षित होती हैं।



### VALUE OF MODESTY



“Women are not there to display their body as an exhibit and object of consumption. They would never like to be considered as an object only. They have a soul with a mind and consider themselves servant of God. The beauty of their should and their heart should be weighed against their moral character. Their veil displaced their faith in the value of modesty rather than their beauty.

### लज्जा का मूल्य

महिला प्रदर्शन के लिए नहीं होती, उसका शरीर सार्वजनिक प्रदर्शन और उपभोग के लिए नहीं है। वह कभी भी यह नहीं चाहेगी कि उसे केवल एक वस्तु समझा जाये। वह हृदय रखने वाली एक आत्मा है और अपने आप को ईश्वर की एक सेवक मानती है। उसकी कीमत उसकी आत्मा, उसके दिल, और उसके नैतिक चरित्र की सुन्दरता से परिभाषित होती है उसका घूँघट उसकी सुंदरता के बजाय उसके विश्वास को प्रदर्शित करता है।

**M. T. Kaifi / एम0 टी0 कैफी**

नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ एलेक्स लिबरेल, पुरुष और महिला के बीच प्राकृतिक जैविक अंतरों को दशाति हुए कहते हैं: 'जो बातें पुरुष और स्त्री में अंतर करती हैं वे केवल लैंगिक अंगों तक ही सीमित नहीं होतीं, बल्कि पुरुष और महिला दोनों के शरीर के ऊतक (टिश्यू) भी अलग-अलग होते हैं। दोनों में शरीर के रसायन भी अलग-अलग होते हैं। कुछ ग्रंथियां कुछ स्त्रावों को उत्सर्जित करती हैं जो केवल एक विशिष्ट लिंग के लिए उपयुक्त हैं। महिला के शरीर के अंदर अंडाशय से स्रावित रासायनिक पदार्थ के संदर्भ में महिला पुरुष से बिल्कुल अलग है।'

जो लोग पुरुष और स्त्री के बीच पूर्ण समानता की मांग करते हैं वे इन बुनियादी तथ्यों और फर्क की उपेक्षा करते हैं। एक महिला के शरीर की प्रत्येक कोशिका में एक स्त्री-संबंधी गुण होता है, जिस की देखभाल मादा हार्मोन द्वारा की जाती है, जिस प्रकार एक पुरुष के अपने अलग गुण और हार्मोन होते हैं। क्या वे इन तथ्यों से अंधे हो जाते हैं जब वे बराबरी चाहते हैं?

पुरुष अधिक कठिन और शारीरिक कार्य कर सकते हैं, जबकि महिलाएँ शारीरिक रूप से वैसी ही शारीरिक मजबूती दिखाने में सक्षम नहीं हैं। पुरुष स्वाभाविक रूप से अपनी पत्नियों के परामर्श से घर की वित्तीय और व्यावसायिक जिम्मेदारियों पर नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए सुसज्जित और योग्य हैं

सऊदी अरब के मौजूदा क्राउन प्रिंस मोहम्मद-बिन-सलमान के अनुसार, सऊदी परंपराएँ जो आर्थिक सुधारों और आधुनिकीकरण के लिए सबसे बड़ी बाधाएँ हैं, समाज में महिलाओं की भूमिका से जुड़ी हैं। यह बहुत ही आश्चर्यजनक है कि इस्लाम के आगमन के बाद भी ऐसी सऊदी परंपराओं की खामी प्रचलित रही जिस पर हमारे पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके करीबी साथी ध्यान नहीं दे पाए।

वास्तव में, इस विषय में एक तथ्य को अनदेखा नहीं करना चाहिए कि ये परम्पराएँ सभी मुस्लिम देशों (तुर्की, ईरान, पाकिस्तान इत्यादि) में तब तक प्रचलित रहीं जब तक कि मुसलमान विश्व के सबसे विकसित और सभ्य देशों (अमेरिका, यूरोप) के सम्पर्क में नहीं आये। इन देशों ने महिलाओं के लिए और भी अधिक स्वतंत्रता उपलब्ध कराई जो इस्लाम भी उनके लिए उपलब्ध नहीं करा पाई। पश्चिम के सबसे सभ्य देशों के संपर्क में आने के बाद ही मुसलमान देश अपनी इन परम्पराओं की कमियाँ देखने लगे, जो इस्लाम के सिद्धांतों पर आधारित थीं।

यह सऊदी परंपराओं की ओर से बहुत ही अनुचित और अन्यायपूर्ण था कि उसने अपनी महिलाओं को उनकी स्त्री सौंदर्य को उजागर करने की स्वतंत्रता से वंचित किया। पश्चिमी समाज की अत्यधिक सभ्य और उन्नत परंपराएँ जो वास्तव में लोकतांत्रिक सिद्धांतों पर आधारित हैं अपनी महिलाओं को हर ऐरे-गैरे की खुशी के लिए

## HIJAB

Asma, daughter of Abu Baqr (RA), entered upon the apostle of Allah (PBUH) wearing thin clothes. The Apostle of Allah (PBUH) turned his attention from her. He said: 'O Asma, when a woman reaches the age of menstruation, it does not suit her that she displays her parts of body except this and this, and he pointed to her face and hands.

### हिजाब

अबू बक्र (रज़ि) की बेटी असमा पतले कपड़े पहनकर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आयीं । अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने उनसे अपना ध्यान हटा लिया। उन्होंने (सल्ल०) कहा। ऐ असमा ! जब एक महिला मासिक धर्म की उम्र तक पहुंच जाती है, तो यह उसे शोभा नहीं देता कि वह अपने शरीर के अंगों को इस तरह और इसके अलावा प्रदर्शित करती है, और उन्होंने उनके चेहरे और हाथों की तरफ इशारा किया।



Prophet Muhammad (pbuh) / पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०)

Abu Dawud, Book 32:4092

अपनी नारी-सौंदर्य का प्रदर्शन करने की स्वतंत्रता प्रदान करती हैं। केवल अल्लाह जानता है कि वह क्राउन प्रिंस मोहम्मद को उनके अद्भुत सुधारों के लिए कैसे पुरस्कृत करेगा जिसने पवित्र (मक्का और मदीना) को पश्चिमी दुनिया के लिए एक अवकाश स्थल बना दिया, जिसने उन्हें वास्तविक सभ्यता, प्रगति और स्वतंत्रता का अर्थ समझा दिया।

सऊदी अरब के मौजूदा युवराज का सपना कई स्तरों पर सऊदी समाज को आजादी प्रदान करना है। उन्होंने महिलाओं की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध को कम करने के लिए कई कदम उठाए हैं। उन्हें अब सार्वजनिक खेल आयोजनों में जाने से मना नहीं किया जाएगा और खुलेआम बाहर जाने पर उन्हें अबाय़ा और निकाब पहनने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वे परिवार के किसी पुरुष सदस्य के बिना विदेश यात्रा कर सकेंगी। इसमें कोई संदेह नहीं कि ये सुधार सऊदी अरब के लोगों के सामाजिक जीवन में आमूल परिवर्तन लाएंगे। सऊदी महिलाओं को अपने देश के नागरिकों के अलावा पर्यटकों के सामने भी अपनी स्त्री सौंदर्य को प्रदर्शित करने की स्वतंत्रता होगी। इससे सऊदी पर्यटन उद्योग को भी बढ़ावा मिलेगा। अब सऊदी महिलाएँ भी पश्चिमी महिलाओं से पीछे नहीं रहेंगी। इससे सऊदी पुरुषों का भी फायदा होगा, जो प्रचलित सऊदी इस्लामिक परंपराओं की उपस्थिति में अपने ही देश के स्त्री-शरीर की सुंदरता की सराहना करने के अवसर से वंचित रह गए और उन्हें पश्चिमी देशों का दौरा करने और वहाँ अपना पैसा बर्बाद करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। इस अवसर के अलावा, जो कि सऊदी अरब दुनिया भर के पर्यटकों को अपने देश की नारी सुंदरता के द्वारा मन बहलाने के लिए प्रदान करेगा, इससे उनके पर्यटन उद्योग को जबरदस्त बढ़ावा मिलेगा और इस तरह उनके राजकोष को भी बढ़ावा मिलेगा।

यह वास्तव में बहुत आश्चर्य की बात है कि हमारे पैगंबर मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उनके करीबी साथियों ने महिला स्वतंत्रता पर कुछ प्रतिबंध लगाते समय इन लाभों की सराहना और पूर्वानुमान क्यों नहीं लगाया। शायद इन शर्तों को लगाना उनके द्वारा जरूरी समझा गया था उन कारणों की वजह से जिन्हें पंद्रह सौ साल बाद इस संबंध में नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ एलेक्स लिबोरेल ने आविष्कार किया था। लेकिन क्राउन प्रिंस का ज्ञान इस संबंध में बहुत उन्नत प्रतीत होता है क्योंकि उन्हें मौजूदा सभ्य दुनिया – यूरोप और अमेरिका के पथप्रदर्शकों के साथ घुलने-मिलने का सबसे अच्छा अवसर मिला है।

वह इस्लामिक परंपराओं के कुँ में एक मेंढक नहीं है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मोहम्मद-बिन-सलमान ने धार्मिक प्रतिष्ठान की शक्ति और अधिकार को कम करने के लिए कदम उठाए हैं। सऊदी सोसाइटी में महिलाओं की भूमिका और भागीदारी के बारे में उनके फैसलों ने धार्मिक सिद्धांतों के दशक को समाप्त कर दिया, जिसका उद्देश्य

Don't get trapped by a cheap item buyer. Go for the pious one who will remain in halal relationship with you (Nikah). Be a rare stone for a genuine jeweler.

घटिया और धोखेबाज़ लोगों के जाल में फँसने से बचो ।  
ऐसे साथी से सम्बन्ध जोड़ने की कोशिश करो जो तुम्हारे  
साथ हलाल सम्बन्ध (निकाह) बनाये रखे । एक अमूल्य  
जौहर की भाँति एक अच्छे जौहरी की सुरक्षा में जाओ ।



M. T. Kaifi / एम0 टी0 कैफी

उन्हें बड़े पैमाने पर गृहणियों की भूमिका तक सीमित करना था। देश में सामान्य शहरी जीवन के पहलुओं को दाखिल करने के लिए उठाए गए कदमों ने, जिसमें मूवी थिएटर शुरू करना और संगीत समारोहों की अनुमति देना शामिल हैं, युवा (विशेष रूप से महिला) सऊदियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया है और विभिन्न पीढ़ियों के बीच संघर्ष को कम कर दिया है। युवा राजकुमार ने कई लोकप्रिय सामाजिक सुधारों की शुरुआत की है और राजकुमार के सुधार के प्रयासों को सफल देखने के लिए अमेरिका की गहरी रुचि है।

### Status of Women in Islam

#### इस्लाम में महिलाओं की स्थिति

She is not a lowly object to be handled by the hands and gazed upon by the eyes of the peoples. Rather, she is a preserved pearl; safeguarded for the husband who Allah has made permissible for her and made her permissible for him. She is the women within Al-Islam.

महिला कोई मामूली वस्तु नहीं होती है, जिसे हाथों से सँभाला जाए और लोगों की बुरी नजरों से देखा जाए। बल्कि, वह एक संरक्षित मोती है जो पति के लिए सुरक्षित है, अल्लाह ने पति – पत्नी को एक दूसरे के लिए वैध बना दिया है। ये इस्लाम के भीतर की महिला हैं।

Shaykh Saleh Al-Fawzan / शेख सालेह अल-फौजान



## Universal Women Rights by Islam since 1443 Years

### Social Rights

- Right and duty to **Obtain Education**.
- Right to **Accept or Reject Marriage Proposal**.
- Right to **Obtain Divorce from her husband**.
- Right to have **Custody of their children** after divorce.
- Right to **Refuse to cook or to wash clothes** of husband.
- Right to **Demand separate house**.
- Right to **Provisions from the Husband** for all her needs.
- Right to **Dress**.

### Economic Rights

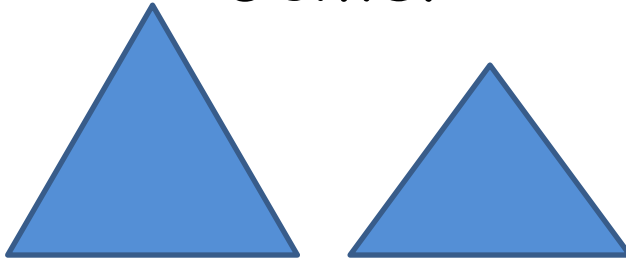
- Right to **Seek Employment**.
- Right to **Do Business**.
- Right to **Work to earn Money** if they need it or want it.
- Right to **keep all her own money**.
- Right to **Do Charity**.
- Right to have **Own property** whether earned or inherited.

### Legal and Political Rights

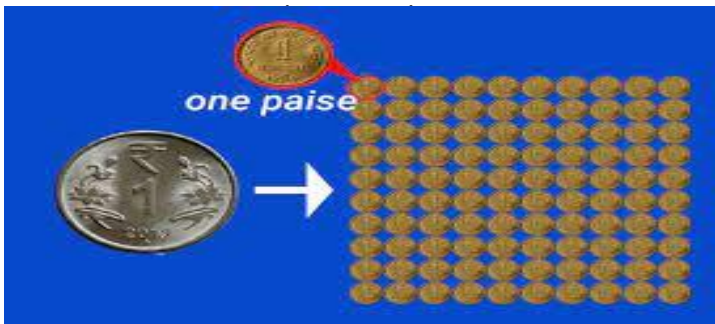
- Right to **Go for prayer**.
- Right to **Be equal before law**.
- Right to **Witness**.
- Right to **Express the opinion & Vote**.

Are the rights of women in Islam  
**equal or similar to that of men?**

Are the rights of  
women in Islam  
equal or similar with  
Gents?



In the above images, the two sides of each triangle are of equal length. This is equality. Where, as when you note the shape of the triangle, it looks the same, but the sizes of individual triangles are different. The shapes are the same.



In the above images, 1 rupee coin and 100 paise are equal in value, but they are not similar.

## Writer's note

Human beings (male & female) like any other living being (a combo of two similar machines with certain biological and anatomical differences) are the most wonderful and beautiful creation of the supreme most power known as Bhagwan, Allah, God etc. The Holy Quran and the hadiths (elaboration of the holy Quran) is actually a manual which tells us how to use this machine to make life comfortable, useful, trouble and conflicts free. There is a very subtle difference between the two machines of this combo. This difference is exploited by the males for their vested interests when the comparison between the two is made on the equality of their rights.

Islamic jurisprudence for women seems to be very much influenced by nature's jurisprudence for women. The non believers in Islam fail to observe this discrimination because of their 'ASTHA' in the tenets of their religion which they follow without any argument.

Why has nature discriminated between males and females? Why is there difference in their voices, why is there a discrimination of beard and moustaches, why is there difference in their physical appearance and strength etc. Why can't both of them bear babies and why can't the males also not suckle the babies like females.

Apparently it appears that nature has been very unjust in distributing the abilities to its creations. Just note some hills are barren and some have heavy vegetation. The sun has its own light while the moon depends upon borrowed light. Some areas of our earth are covered with ice and some with deserts.

Islam at the behest of nature's facilitating practices has formulated discriminatory rules between the males and females also. There is no equal rules for covering their bodies, discharging the obligations of answering nature's calls alike, etc.

Has nature really polluted the thinking of human beings?

What one fails to understand that Islam ensures gender equality, not similarity in every sphere of life. It guarantees rights of men and women in equal degree and not in similar degree. Most of the non-Muslims who are completely ignorant about the teachings of Islam as mentioned in the Holy Quran present Islam as full of cruelty for women. Their misunderstandings are partly due to their ignorance and partly due to the misconduct of the Muslim imposter of Quranic knowledge and scholars of Hadith (the practical demonstration of the teachings of Islam by the Prophet (pbuh)).

Some of the criticism to highlight the inequality of rights between men and women are really very funny rather foolish "why are women not allowed to expose their body to the extent to which men are allowed?" Some of the differences are

based on their biological & physical needs and natural requirements of their bodies. The modern (so called) society tries to exploit women for their pleasure by calling the distinction between them difference.

Most of the non-Muslims all over the world particularly of India, believe in absolutely wrong information about the rights of men & women in Islam. This is not because of their prejudice or un-awareness with regards to Islam, but because of the wrong and distorted demonstration of its tenets and facts by Muslims also. These demonstrators of the wrong picture of Islam are also not at all responsible for this. The persons who are responsible for presenting the distorted picture of Islam are actually the so called scholars of Islam with their shallow knowledge about it like political parties. There are religious parties also (who interpret patriotism to their own advantage). Their TRP depends upon the member of their followers. Those who are masters of oratory impress the common ignorant masses with the jugglery of their words. They themselves are not competent enough to distinguish the difference between similarities, identities and equality (which implies justice also). Just consider these examples: There are certain things which only a father can do for his children and certain things only a mother, In this case equality between the two has to be judged on the basis our respect which we owe to them. Just see another example: this analogy applies to the equality between man and women. They both deserve the same respect, value, and honor. Islam believes in this interpretation of equality between them.

The comparison of equality between the two should be in the right prospective and not logical. How shall we regard the justice of our Prophet Solomon when two women came to him claiming a new born child as their own. Did he show equality in his judgment on the basis of logic or the just perspective of their claims?

The objective of my study is to identify the misinterpretations and misconceptions of women's rights in Islam. The paper examines five common misinterpretations of women rights, such as their **spiritual status, intellectual status, economic status, social status and Hijab** (covering certain portions of the body).

The most useful of all the metals is the iron and the most useless one is the gold (an exaggerated comparison). Is it unjust in quality not to keep iron in a velvet box in an iron safe and bank locks like gold?

Just think over it like a judge

I am thankful and grateful to Mr. Shakilullah Khan (Rtd. Principal, Jamia Millia Islamia, New Delhi) & Prof. Arvind Kumar (Rtd. Head of Hindi Department, N N College, Bihar University, Bihar) for their valuable suggestions in transforming my efforts in the form of this book "Rights of Women in Islam: Equal or Similar". May All kind bless them all.

### What Kind of women will go to heaven?

कैसी महिलायें जन्नत में जाएँगी

Prophet Muhammad (PBUH) said:

“The worst women of yours are those who display their beauty to strangers and are arrogant, and they are hypocrites, NONE of them will enter Jannah EXCEPT the likes of red-legged crow (a rare bird) i.e. only a few.”

**(Silsilatul Ahadeeth Al-Sahihah No. 1849)**

पैगम्बर मोहम्मद (सल्ल०) ने फरमाया “तुम में सबसे ख़राब औरत वो है जो अजनबियों के सामने अपना हुस्न नुमायां करती है, और जो मगरूर हैं, झूठी और बनावटी हैं, इनमें से किसी को भी जन्नत नसीब नहीं होगी, सिवाय उनके जो नायाब ना हों” ।

**सिलसिलातुल अहादीस अलसहीहा नं.1849**

## Why Women cannot shake their hands with man in Islam?

A non-Muslim came to a Muslim and asked:  
Why is it not permissible in Islam for women to shake hands with men?

The Muslim asked:

“Can you shake hands with a Queen?”

The non-Muslim replied:

Of course not! There are only a certain people who can shake hands with the Queen.

The Muslim replied:

Our women are queens and queens do not shake hands with strange men (Non-Mehram).



If one of you were to be struck in the head with an iron needle, it would be better for him than he were to touch a woman he is not allowed to.

**Prophet Muhammad (PBUH)**

## Contents

⇒ Treatment of women in Islam:	40
⇒ The Grant of Equal or Similar Rights to both of them.....	41
⇒ Spiritual status of Muslim women:	42
⇒ Intellectual status of Muslim Women:	42
⇒ Economic Status of Muslim Women:	42
⇒ Social Status of Muslim Women:	43
• Daughter	43
• Wife	43
• Mother	44
⇒ Hijab	44
⇒ The role of Muslim Women today:	45
⇒ Financial and Moral Responsibilities of the Household:	49



## Are the rights of women in Islam equal or similar to that of men?

The women in Islam are the most misunderstood notions. The western world generally considers Muslim women as repressed and deprived of their rights. The media portrays a stereo typed Muslim woman as fully dominated by her husband, with only a little better status than a slave. But the historical facts are, that for 1450 years, The Muslim women have been enjoying the rights for which the western women are still struggling.

Islam provides a social system which upholds the rights and responsibilities of each individual. This system provides a balance in the role and status of men and women. It put puts the status of women on an equal footing with that of men. 1450 years ago the Holy Prophet Muhammad (pbuh), through the guidance of Allah in the Holy Qur'an established this system.

Let us examine the rights that Muslim women enjoy, along with other women's issues and their place in society.

**Treatment of women in Islam:** It is important to understand what the condition of women was before the advent of Islam. In pre-Islamic Arabia, and in the rest of the world, their condition was equal to that of slaves and chattels with no rights. Women could neither own nor inherit property. In domestic affairs, they had no rights over their children or themselves; in fact, they could be sold or abandoned by their husbands at will. If they were abused by their husbands, they had no recourse to divorce. They had no real status in the society, not being respected as wife, mother or daughter. In fact, daughters were considered worthless and were often killed at birth. Women were given little or no education, and had no say in religious matters, being regarded as limited in spirituality and intellect.

These abusive conditions existed well into the 19th century in most parts of the world, even in the United States, where some basic rights were given to women only in the beginning of the 20th century. But in Arabia, in the 6th century, with the advent of Islam the condition of women changed

dramatically. Almost overnight, women were endowed with equal rights and put on the same level with men. In the Holy Qur'an, Allah makes it clear that He created men and women as equal beings. He says: **"He has created you from a single being; then of the same kind made its mate."** Holy Quran-39:7

Prophet Muhammad (pbuh), himself carried out the commands of Allah and treated women with great honor, kindness and dignity. Islam considered many factors while distinguishing between the rights of men and women. The quantum of these rights is equal but not similar. **The controversy starts when we fail to distinguish between equality and similarity.**

Islam grants both of them equal status with rights which suits them and which they are capable of enjoying physically, biologically, spiritually, socially and emotionally etc. Women are fragile and have to be handled with great care. Any wrong handling harms them and the harm to them harms the whole structure of the society. It may sound paradoxical that their fragility does not make them weak. Can we deny that the hand that rocks the cradle rules the world?

⇒ **The Grant of Equal or Similar Rights to both of them will, in fact, amount to great injustice:** The sufferings of women before the advent of Islam was actually because of the fact that women also, indirectly, were expected to perform like men which was not possible physically. So, they were considered as objects which are thrown away when they become unusable. They treated them as an object of carnal pleasure only. Attraction towards beauty is a natural phenomenon common to all living beings. And sexual beauty is the most dominant of them all. Islam devised means to keep this attraction among human being within decent limits. The attraction of beauty is the most difficult one to counter and that is why it is absolutely correct to say that **'beauty provoked thieves sooner than gold'**. For the safety of the society it is absolutely important that men and women keep themselves at bay from each other. Women by nature are credulous & gullible and prone to exploitation but man by nature is opportunist and likes exploitation. A woman's motherly instinct makes her victim to various forms of exploitation.

⇒ **Spiritual status of Muslim women:** The spiritual status of women in Islam is no way less than that of men. The most important change that Islam brought for women was to raise their spiritual status. Allah has clearly declared in the Holy Qur'an that woman have the same spiritual capacity as men, and that they can secure equal spiritual rewards by their own efforts. The Holy Qur'an says: "But who so ever does good work, whether male or female believer shall enter heaven" Holy Quran- 4:125. The Holy Qur'an repeatedly emphasizes this equality by addressing both men and women in many verses. It leaves no doubt as to the spiritual level of women. It says: surely the men and women who submit to the will of "Allah have forgiveness and a mighty reward." Holy Quran- 33:36

⇒ **Intellectual status of Muslim Women:** Islam stresses that education for men and women is of equal importance, and "It is the duty of every Muslim man and woman to acquire knowledge". Prophet Muhammad (pbuh)

The Prophet (pbuh) exhorted both to "seek knowledge even if you have to go to China," and to "seek knowledge from the cradle to the grave." Knowledge enables us to ponder and only those who ponder can understand the signs of Allah and come closest to him. The Qur'an further teaches us a short prayer which simply says: "O my Lord, increase me in knowledge." Holy Quran- 20:115

The Prophet (pbuh) encouraged his wives to seek knowledge and once stated that "half the religion of Islam could be learned from Hazrat Ayesha (his wife)." Indeed, after his death, the advice of his wives was sought by the entire Muslim community. Now a days you will see Muslim women active in many professions, such as medicine, nursing and teaching. It is interesting to note that at the time Islam brought enlightenment for women, in Europe a woman displaying any kind of knowledge was in danger of being burnt. Furthermore, most universities, even in the United States, did not admit women to higher learning until this century.

⇒ **Economic Status of Muslim Women:** The Holy Qur'an states: "Men shall have the share of what they have earned, and women

shall have the share of what they have earned. And ask Allah of His bounty. Surely, Allah has perfect knowledge of all things." Holy Quran-4:33

This verse established the equality of men and women in so far as their works are concerned. A married woman is not even required to spend out of her own wealth, as it is the duty of her husband to provide for her.

Islam further protected the economic status of woman by requiring a husband to give her a dowry at the time of marriage. The Holy Qur'an-4:5 states: "And give the women their dowries willingly. But if they, of their own pleasure remit to you a part thereof, then enjoy it as something wholesome and pleasant. Interestingly, this is addressed not only to the husband but also the woman's relatives. They have no right over it.

Finally, Islam gave woman the right to inherit. The Holy Qur'an makes clear that: "for women there is a share of that which parents and near relatives leave, whether it be a little or much - a determined share." Holy Quran-4:8

➡ **Social Status of Muslim Women:** The social status of women changed dramatically with the advent of Islam. Society was given clear guidance by the Holy Qur'an and Prophet Muhammad (pbuh) for the treatment of women in their roles as daughter, wife and mother.

**1. Daughter:** The pre-Islamic practice of killing infant girls at birth for fear of humiliation or poverty was totally abolished by Islam. In the Holy Qur'an, Allah says: "Slay not your children for fear of poverty, it is We who provide for you and for them, and approach not foul deeds, whether open or secret..." Holy Quran- 6:152 And "He creates what He pleases, He bestows daughters upon whom He pleases, and He bestows sons on whom He pleases." Holy Quran- 42:50

After forbidding the killing of children, Islam goes on to teach a father that he must raise his daughters in the same way as his sons. In fact, taking good care of a daughter opens the door to Paradise for a Muslim. The Prophet Muhammad (pbuh) said: "He who brings up two girls through their childhood will appear on the Day of Judgement attached to me like two fingers of a hand."

**2. Wife:** Islam changed the role of wife from being little more than a servant to being an equal with her husband on all levels. The Holy Qur'an makes it

clear that in marriage women have rights similar to men.

Marriage is a harmonious union of two souls- The object of marriage is to seek comfort from each other. The Holy Qur'an beautifully defines the equality of the relationship with this verse: **“They are a garment for you and you are a garment for them.” Holy Quran -2:188.** Islam further teaches that the woman be treated with kindness and generosity and be given equal rights in marriage and divorce. Islam permits her to seek divorce if absolutely necessary.

**3. Mother:** In her role as mother, Muslim woman achieves her highest social status. **The Holy Qur'an repeatedly directs Muslims to care for their parents, especially the mother.**

The Prophet (pbuh) emphasized the love and respect due to the mother by saying: "Paradise lies at the feet of the mother." In another hadith, he is reported to have stated when asked four times to whom a person should be kind: Three times he (pbuh) said- "to your mother." Only upon being asked a fourth time did he reply: "your father." This emphasizes how important it is for a Muslim to take care of his/her mother.

⇨ **Hijab (The veil):** The teachings of Islam concerning hijab (the veil) and segregation of the sexes is probably the most misunderstood in the Western society. This is because of the widespread and erroneous notion that observing hijab is a heavy restriction imposed on Muslim women. In fact, the very opposite is true. You will find that hijab is a means of protecting women, and providing them with freedom from many social ills. The word "parda" is also used to describe the concept and the practice of hijab.

Islam provides guidance not only for individuals, but also lays down rules for the good of society. Hijab guards the moral condition of society. Muslim women also share with men the responsibility of upholding the moral standard of society. The Holy Qur'an-24:31 says: **"Say to the believing men that they restrain their eyes and guard their private parts. That is purer for them. Surely, Allah is well aware of what they do.** And further in Ayat- 24:32 **“Say to the believing women that they restrain their looks and guard their private parts, and that they display not their beauty or their embellishment**

except that which is apparent thereof, and that they draw their head coverings over their bosoms...." From these verses it is made clear that both men and women are to conduct themselves with modesty and propriety at all times, and especially when in each other's presence. This teaching is based on the fact that Islam recognizes that "prevention is better than cure." Segregation of the sexes is prescribed to check such situations as may erode the moral values of the society and save it from problem such as adultery, teenage pregnancies and sexually transmitted diseases.

The Holy Qur'an requires that Muslim women dress modestly, cover their heads and wear an outer garment to conceal their beauty from strangers. However, the true and full observance of hijab is achieved when "veiling" extends to a man's or woman's mind and heart. This means that one should veil or shield his/her mind and heart from impure and immoral thoughts when in contact with the opposite sex. This will make men & women treat each other with respect and understanding.

Another verse of the Holy Qur'an states: "O Prophet! tell thy wives and thy daughters, and the women of the believers, that they should pull down outer cloaks from their heads and faces so that they may be recognized and not molested. And Allah is Most Forgiving, Merciful." Holy Quran- 33:60

Hijab provides Muslim women with freedom from some of the problems that women are facing today. In Islam woman is not regarded as a "sex object," nor is she exploited or harassed in demeaning manner.

Islam has undoubtedly given woman dignity and honor through hijab. Muslim women who follow the practice of hijab appear to be more relaxed and at ease with themselves. This is because Islam has reduced the importance of physical appearance as a mark of self-esteem. A Muslim woman is free to develop in herself other talents, and does not have to rely on her physical beauty to achieve what she wants.

➡ **The role of Muslim Women today:** This chapter has attempted to give you an idea of the position that Muslim women hold in society, and the rights given to them by Islam. Muslim women have all the rights that Muslim men enjoy, and in some ways, have certain privileges which men do not enjoy.

She has the right to go out and work if she needs to, but she is not obliged to shoulder the financial responsibility for the household. She is encouraged to seek higher education for her own improvement, and subsequently for her offspring.

Some misconceptions concerning the role of woman in society are prevalent because unfortunately, some "Muslim" countries do not practice the teachings of the Holy Qur'an.

Some may question Why are woman in Islam, not allowed to have equal rights for employment!

**The answer is:** A woman cannot do jobs which exploit her body, like modeling, film acting -it exploits her body. We want our woman folk to be respected. Certain jobs are actually a disguised form, of the exploitation of the body of the woman, of deprivation of her honor, and degradation of her soul.

The Western society, claiming to uplift the woman, have actually degraded her, to the status of a concubine, to mistresses, and society butterflies...which are hidden behind the colorful screen of art and culture.

However, a woman should not work in a non-Muslim environment unless there is an extremely compelling reason for her to do so. There are several obvious guidelines that should be followed if a woman must work. There is an immense and growing need for Muslim women in various medical fields, in education, in helping professions such as social work, counselling, psychology, psychiatry, and childcare. With the growth of technology and communications capabilities, there are unlimited opportunities for women to do some type of work or business from home (such as secretarial work and typing; writing, editing, publishing, computer work, etc.). This would be an ideal situation that would eliminate many of the concerns that may arise for working women.

**Lady Cook, the well-known English writer says in New Echo:** "Men like (and prefer) the mixed environment. The greater the co-ed. environment (between male and female), the more illegitimate children the society will have.

The work that a woman performs outside her home must be, in the first place, a lawful employment or job that suits the nature and physique of the woman. She must not, for instance, be obliged to do heavy industrial jobs, and other jobs to which men are more suited to perform.

**The question here is: Why does a woman have to work?** Does she work to earn her own living expenses. Islam has absolved her from this duty by obliging, as mentioned earlier, the male family members to take care of the entire financial needs and obligations. Thus, from her birth to death, throughout the various stages of her entire life, she is not required to work to give utmost dignity and concentration to her paramount mission and duty of taking care of the home and raising the children.

**The well-known English scholar Samuel Smiles, one of the pillars of the English renaissance says:** "The system that has required women to work in factories and industrial areas, has destroyed the family life. It has attacked, in fact, the basic structure and foundations of the home and destroyed the essential pillars of the family. It has cut and destroyed social ties as well. The real job and profession of a woman is to raise a good, sound and moral family.

⇒ **Financial and Moral Responsibilities of the Household:** The natural, physical and social qualities of men, being stronger gender, demand that they take charge of such responsibilities as are **free from the burden of menses, pregnancy, nursing and early childrearing.** Women by their natural constituency are the weaker sex, built biologically, emotionally and socially for their role as child bearer and homemaker. They are more endowed with intuition and emotional intelligence.

Due to the pains and burdens of menses, pregnancy, delivery, nursing, and continual child-care, women often require various periods of confinement for rest, and they are not required to take on additional financial and vocational responsibilities for the sustenance and maintenance of the household. All these concerns affect the mental state of a woman and will be reflected in her life, attitude and behaviour.

**Dr. Alex Liberelle, a Nobel Prize winner, says** while illustrating the natural



organic differences between man and woman:

“Matters that differentiate man and woman are not limited to sexual organs, the tissues of the body in both male and female are different. The chemistry of the bodies is also different in both. Certain glands excrete certain secretions that are only suitable for a specific gender. The woman is completely different from man in terms of the chemical material secreted from the ovary inside the woman's body.”

Those who call for complete equality between men and women disregard basic facts and essential differences. Every cell of the body of a woman has a feminine quality, nursed by female hormones, just as a man has his distinct qualities and hormones. Are they blind when they wish to be equal? Men can perform more laborious and manual jobs, while women are not physically able to show comparable physical endurance. Men are naturally equipped and qualified to assume the role of leadership over financial and vocational responsibilities of the household in consultation with their best second-halves (their wives).

According to the current crown prince Mohammad -bin- Salman , Saudi traditions which pose greatest obstacles to economic reforms and modernization are related to women's role in the society . it is very surprising that the drawback of such Saudi traditions remained in vogue even after the advent of Islam and escaped the notice of our prophet Muhammad (pbuh) and his closest companions also.

One fact, of course, in this regard should not be left un-noticed that these traditions remained prevalent in all Muslim countries (Turkey, Iran, Pakistan etc.) till such time as the Muslims of these countries did not come into contact with the most advanced and civilized countries (America, Europe) of the world. These countries procured still more freedom for the women which even Islam failed to procure for them. It was only after coming into contact with the most civilized countries of the west that the Muslim countries started noticing the drawbacks of their traditions which were based on tenets of Islam.

It was very unfair and unjust on the part of Saudi traditions to deny their womenfolk the liberty of exposing their feminine beauty. The highly

civilized and advanced traditions of the western society based on truly democratic principles provide their womenfolk the freedom of exposing their feminine beauty for the pleasure of even every Tom, Dick and Harry also. Only Allah knows how He will reward Prince Mohammad for his wonderful reforms and making the holy land Makkah and Madina a holiday resort for the western world which made him realize what real civilization, advancement and freedom mean.

The vision of the current crown prince of Saudi is to open up Saudi society on many levels. He has taken steps to relax restriction on women's freedom.

They will no longer be prohibited from attending public sporting events and they will no longer be required to wear the Abaya and Niqab when out in Public. They will be able to travel abroad without any male family member. (These reforms, will no doubt, bring a radical change in the social life of the Saudis. The Saudi women will also have the freedom to exhibit their feminine beauty to tourists besides their own fellow citizens. This will give a boost to the Saudi Tourism Industry also. Now Saudi Women will also not lag behind their counterparts in the Western society.

This will help Saudi men folk also who in the presence of the prevalent Saudi Islamic Traditions remained deprived of the opportunity of appreciating the beauty of the feminine body of their own country and were forced to visit western countries and waste their money there. Besides the opportunity that Saudi Arabia will provide to the tourists from all over the world to be entertained by the feminine beauty of their own country will give a tremendous boost to their tourism Industry and thereby their exchequer also.

It is really very surprising why our Prophet Mohammad (pbuh) and his closest companions did not appreciate and foresee these benefits while imposing certain restrictions on female freedom. Perhaps the levy of these conditions was considered necessary by them for the reasons discovered by Dr. Alex Liborelle, a Nobel Prize winner, in this regard fifteen hundred years later.

But the knowledge of the Prince Crown seems to be far advanced in this regard because he got the best opportunities to mix up with torch bearers of the present civilized world- Europe & America.

He is not a Frog in the well of Islamic traditions. To achieve his goal Mohammad-bin-Salman has taken steps to curtail the power and authority of

religious establishment. His decisions concerning the role and participation of women in Saudi Society have brought to an end decade of religious doctrine aimed at confining them largely to the role of homemakers. Steps to introduce aspects of normal urban life to the country, including introducing movie theatres and permitting music concerts have improved the quality of the life for young (particularly female) Saudis and reduced intergenerational friction.

The young crown prince has instituted a number of popular social reforms and the united states has a strong interest in seeing the crown prince's reform efforts succeed.

### **Have Haya' for Allah as is His due**

Abdullah bin Mas'ud narrated that the Messenger of Allah (PBUH) said: Have Haya' for Allah as is His due, (Abdullah bin Mas'ud said: 'O' Prophet of Allah! We have Haya', and all praise is due to Allah. Messenger of Allah (PBUH) said: Not that, but having the Haya' for Allah which He is due is to protect the head and what it contains and to protect the insides and what it includes, and to remember death and the trial, and whoever intends the Hereafter, he leaves the adornments of the world. So, whoever does that, then he has indeed fulfilled Haya', meaning the Haya' which Allah is due.

(Prophet Muhammad (PBUH) Jami' at- Tirmidhi 2646)





## اسلامی معاشرے میں عورت

اسلامی معاشرے میں عورت شمعِ خانہ ہے نہ کہ شمعِ محفل۔

اس کا اصل شرف گھر میں ہے نہ کہ بازار میں۔

عورت کو گرچہ منصبِ نبوت کا اعزاز حاصل نہیں ہوا لیکن کسی عورت نے خدائی کا دعویٰ بھی نہیں کیا۔

کہ جس روپ میں وہ سر تاپہ مہر و وفا ہوتی ہے۔

خوش اندام عورت سے خوش اطوار عورت بہتر ہے۔

جس عورت میں ظاہری حسن اور باطنی جمال جمع ہو جائیں وہ وہ نعمت غیر مترقبہ ہے۔

اسلام نے عورت کو فکرِ معاش سے آزاد کیا اور مرد کو اس کا کفیل بنایا مغرب نے عورت کو آزادی کا لالچ

دیکر تلاشِ معاش کے چکر میں ڈال دیا

دنیا بھر کے دنیاوی تاجروں نے عورت کو اشتہارات کی زینت بنایا۔

عورت گھر میں رہے تو محرم راز بن جاتی ہے، عورت گھر سے باہر نکلے تو ”فتنہ طراز“ بن جاتی ہے

بے پردہ عورت شیطان کی ساتھی اور سامانِ زحمت ہے لیکن باپردہ خاتون اللہ رحمان کا سایہ رحمت ہے۔

گیا جو کہ ڈاکٹر، لیکس لبریل، نوبل انعام یافتہ، مصنف نے پندرہ سو سال بعد دریافت کیے ہیں۔ لیکن سعودی ولی عہد کی معلومات اس سلسلے میں زیادہ ایڈوانس معلوم پڑتی ہیں کیوں کہ انہیں موجودہ متمدن دنیا یورپ اور امریکا کے قائدین کے ساتھ میل جول کے بہترین مواقع نصیب ہوئے ہیں۔ وہ اسلامی روایات کے تعلق سے کنویں کا مینڈک نہیں ہیں۔ اس مقصد کی حصولیابی کے لیے، محمد بن سلمان نے مذہبی اداروں کی طاقت و اقتدار کو ختم کرنے کے اقدامات کیے ہیں۔ سعودی معاشرے میں خواتین کے کردار اور شراکت کے تعلق سے ان کے فیصلوں نے صدیوں پرانی مذہبی طریق معاشرت کا خاتمہ کر دیا ہے جس کا مقصد بڑی حد تک انہیں خانہ ساز کے کردار میں محدود کرنا تھا۔ ملک میں نارمل شہری زندگی کے پہلوؤں کو متعارف کرانے کے لیے جو اقدامات کیے گئے ہیں، جن میں سینما گھروں کے قیام اور میوزک کانسرٹ کی اجازت دینا شامل ہے، ان سے سعودی نوجوانوں (خاص طور پر لڑکیوں اور دو شیزاؤں) کا معیار زندگی بہتر ہوا ہے اور اس سے ربط و ضبط کی مزاحمت میں کمی آئی ہے۔

نوجوان ولی عہد نے متعدد مقبول سماجی اصلاحات شروع کی ہیں اور ریاستہائے متحدہ امریکہ کو ولی عہد کی اصلاحی کوششوں کو کامیاب دیکھنے میں زبردست دلچسپی ہے۔

محمد تشکیل کیفی

## چہرے کے بال اکھاڑنے والیوں پر اللہ تعالیٰ کی لعنت ہے

عبداللہ بن مسعودؓ سے روایت ہے فرمایا اللہ کے رسول ﷺ نے: حسن کے لئے گودنے والیوں، گدوانے والیوں، چہرے کے بال اکھاڑنے والیوں پر اور دانتوں کے درمیان کشادگی پیدا کرنے والیوں پر جو اللہ تعالیٰ کی خلقت کو بدلیں ان سب پر لعنت بھیجی ہے میں بھی کیوں نہ ان سب پر لعنت کروں جن پر رسول کریم ﷺ نے لعنت بھیجی ہے اور اس کی دلیل کہ آنحضرت ﷺ کی دلیل خود قرآن کریم میں موجود ہے۔ آیت ”وما اتکم اللہ رسول فخذوا“ ہے۔ صحیح بخاری۔ ۵۹۳۱

## شوہر کے بھائیوں سے پردہ کرنا

"(نامحرم) عورتوں کے پاس آنے جانے سے بچو!

ایک انصاری صحابی نے عرض کیا

دیور کے بارے میں آپ کیا فرماتے ہیں؟

تو آپ ﷺ نے فرمایا

دیورتو (تمہارے لیے) موت ہے

(یعنی شوہر کے بھائی وغیرہ سے پردہ کرنا انتہائی ضروری ہے،

کیونکہ وہ تباہی و ہلاکت میں ڈالنے کا بڑا سبب ہے)۔

رسول اللہ ﷺ (صحیح بخاری: 5232)



ممالک کے رابطے میں آنے کے بعد ہی مسلم ممالک نے اپنی روایات کے نقصانات کو محسوس کرنا شروع کیا جن کی بنیاد اسلام کے اصولوں پر قائم تھی۔

عورتوں کو اپنے نسوانی حسن و جمال کے اظہار کی آزادی نہ دے کر سعودی روایات نے ان کے ساتھ انتہائی ظلم و زیادتی کا معاملہ کیا تھا۔ مغربی معاشرے کی انتہائی متمدن اور ترقی یافتہ روایات، جن کی بنیاد خالص جمہوری اصولوں پر قائم ہے، عورتوں کو ہر کس و ناکس کے سامنے اپنے نسوانی حسن و جمال کے جلوے بکھیرنے کی آزادی عطا کرتی ہیں۔ اللہ ہی بہتر جانتا ہے کہ وہ کس طرح ولی عہد کو ان کی حیرت انگیز اصلاحات اور مکہ اور مدینہ کی مقدس سرزمینوں کو مغربی دنیا کے لیے سیاحتی تفریحی مقامات بنانے کے لیے کیسا بدلہ دے گا، جس نے ان کو یہ باور کرایا کہ حقیقی تمدن، ترقی اور آزادی کے کیا معنی ہیں۔

موجودہ سعودی ولی عہد کا وژن مختلف سطحوں پر سعودی معاشرے کو آزاد کر دینا ہے۔ انہوں نے عورتوں کی آزادی پر عائد پابندی میں ڈھیل دینے کے لیے اقدامات کیے ہیں۔

اب انہیں کھیل کود کی عوامی تقریبات میں شریک ہونے سے نہیں روکا جائے گا اور نہ ہی انہیں اب باہر نکلنے وقت عبایہ اور نقاب پہننے کی ضرورت ہوگی۔ وہ بیرون ملکوں کا سفر گھر کے کسی فرد کی معیت کے بغیر کر سکیں گی۔ (یہ اصلاحات بلاشبہ سعودی عرب کی معاشرتی زندگی میں ایک بنیادی تبدیلی لائیں گی۔ سعودی خواتین بھی ہم وطنوں کے علاوہ سیاحوں کے لیے بھی اپنے نسوانی حسن و جمال کا مظاہرہ کرنے کے لیے آزاد ہوں گی۔ اس سے سعودی عرب کی سیاحتی صنعت کو بھی فروغ حاصل ہوگا۔ اب سعودی خواتین بھی مغربی معاشرے میں اپنی ہم جنسوں سے پیچھے نہیں رہیں گی۔

اس سے سعودی مرد بھی فیض یاب ہوں گے جو کہ ہر چہار جانب سعودی اسلامی روایات کی موجودگی میں اپنے خود کے ملک کی نسوانی باڈی کی خوبصورتی کی داد دینے کے مواقع سے محروم رہ جاتے تھے اور وہ مغربی ممالک کا دورہ کرنے اور وہاں اپنی دولت بہانے کے لیے مجبور تھے۔ اس کے علاوہ، سعودی عرب دنیا بھر کے سیاح کو اپنے ملک کے نسوانی حسن و جمال سے لطف اندوز ہونے کا موقع عنایت کرے گا، جس سے ان کی سیاحتی صنعت کے ساتھ ساتھ ان کے خزانے کو بھی خوب خوب فائدہ پہنچے گا۔

یہ بات واقعی بہت حیران کن ہے کہ کیوں ہمارے نبی محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) اور ان کے قریبی اصحاب (رضوان اللہ علیہم اجمعین) کو خاتون کی آزادی پر مخصوص پابندیاں عائد کرتے وقت یہ فوائد نظر نہ آئے اور انہوں نے اس کو پسند نہ فرمایا۔ شاید ان حالات کے خراج کو ان اسباب کی بنا پر ضروری تصور کیا

### مالک الموت سے ماں کا سودا

ایک رات میں اپنے کمرے میں سو رہا تھا کہ آہٹ سے میری آنکھ کھل گئی  
 سامنے موت کا فرشتہ کھڑا تھا۔ میں نے گھبرا کے پوچھا کہ یہاں کیسے؟ مالک  
 الموت نے کہا کہ تیری ماں کو لینے آیا ہوں، میں اک دم گھبرا گیا۔ آنکھ نم ہو گئی،  
 میں نے کہا ایک سودا کرتے ہیں مجھے لے جاؤ، میری ماں کی زندگی بخش دو۔ اس  
 پر مالک الموت نے مسکراتے ہوئے کہا کہ لینے تو تجھے ہی آیا تھا تجھ سے پہلے  
 تیری ماں نے مجھ سے سودا کر لیا ہے۔

نامعلوم افراد

رکھ کے لیے اضافی مالی اور پیشہ ورانہ ذمہ داریاں لینے کی ضرورت نہیں ہے۔ یہ تمام پریشائیاں عورت کی دماغی حالت پر اثر انداز ہوتی ہیں جو اس کی زندگی، رجحان اور طرز عمل میں لامحالہ منعکس ہوں گی۔

ڈاکٹر الیکس لبریل، جو کہ ایک نوبل انعام یافتہ مصنف ہیں، مرد و خاتون کے درمیان فطری عضویاتی فرق کی وضاحت کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ:

”وہ امور جو مرد و خاتون کے درمیان فروق کو ظاہر کرتے ہیں وہ صرف جنسی اعضاء تک محدود نہیں ہیں، بلکہ مرد و خاتون دونوں کے جسمانی نسج بھی منفرد ہوتے ہیں۔ دونوں میں اجسام کی کیمسٹری بھی جداگانہ ہوتی ہے۔ مخصوص غدود مخصوص رطوبت خارج کرتے ہیں جو کہ صرف کسی مخصوص جنس کے لیے مناسب ہیں۔ عورت کے جسم کے اندر بیضہ دانی سے جو کیمیائی مواد خارج ہوتے ہیں اس معاملہ میں عورت مرد سے بالکل مختلف ہے۔“ وہ لوگ جو مرد و زن کے درمیان مکمل مساوات کی وکالت کرتے ہیں وہ بنیادی حقائق اور اصل فرق کو نظر انداز کر دیتے ہیں۔ عورت کے جسم کا ہر ایک خلیہ نسوانی خصوصیت کا حامل ہوتا ہے جسے نسوانی ہارمون تغذیہ فراہم کرتے ہیں، ٹھیک اسی طرح جیسے مرد کی منفرد خصوصیات اور ہارمونز ہوتے ہیں۔ مساوات کی خواہش کا اظہار کرتے وقت کیا وہ اندھے ہو جاتے ہیں؟

مرد زیادہ مشقت طلب اور دستی کام کر سکتے ہیں جبکہ عورتیں جسمانی طور پر مرد کے مساوی جسمانی جدوجہد کا مظاہر کرنے سے قاصر ہیں۔ مرد فطری طور پر اپنی نصف آخر (بیویوں) کی مشاورت میں گھرانے کی مالی اور پیشہ ورانہ ذمہ داریوں کے لیے قائدانہ کردار ادا کرنے کے لیے تیار اور اہل ہوتے ہیں۔

موجودہ سعودی ولی عہد محمد بن سلمان کے مطابق، سعودی روایات جو کہ معاشی اصلاحات اور جدید کاری کی راہ میں سب سے بڑی رکاوٹیں ہیں وہ معاشرے میں خواتین کے کردار سے متعلق ہیں۔ یہ بات انتہائی حیران کن ہے کہ اس طرح کی سعودی روایات کا نقصان اسلام کے ظہور کے بعد بھی جاری رہا اور وہ ہمارے نبی محمد صلی اللہ علیہ وسلم اور ان کے اصحاب کی نظروں سے اوجھل رہیں۔

اس سلسلہ میں ایک حقیقت نگاہ سے اوجھل نہیں رہنی چاہیے کہ یہ روایات تمام مسلم ممالک (ترکی، ایران، پاکستان، وغیرہ) میں اس وقت تک قائم رہیں جب تک ان ممالک کے مسلمان دنیا کے زیادہ متمدن اور ترقی یافتہ ممالک (امریکا، یورپ) کے رابطے میں نہیں آئے۔ ان ممالک نے عورتوں کے لیے اس سے کہیں زیادہ آزادی درآمد کر لی جتنی اسلام نے بھی انہیں نہیں دی تھی۔ زیادہ تہذیب یافتہ مغربی

## عورتوں کے لیے ناپینا سے پردے کا حکم

ام سلمہؓ سے روایت ہے کہ وہ اور میمونہؓ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس تھیں کہ اتنے میں ابن ام مکتومؓ (ایک نابینا صحابی) آئے اور آپ کی خدمت میں حاضر ہوئے تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ”تم دونوں اس سے پردہ کرو۔“ میں نے عرض کیا: اللہ کے رسول صلی اللہ علیہ وسلم! کیا وہ نابینا نہیں؟ وہ ہمیں دیکھ کیسے سکتے ہیں، تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ”کیا تم دونوں نابینا ہو! تم اسے نہیں دیکھ رہی ہو۔“

اسنادہ حسن، رواہ احمد والترمذی والبوداؤد۔

ایک عورت اپنے گھر سے باہر جو کام کرتی ہے اسے لازماً ایک ایسا جائز کام یا ملازمت ہونا چاہیے جو کہ عورت کی فطرت اور جسمانی صلاحیت سے ہم آہنگ ہو۔ مثال کے طور پر، اس پر ہرگز بھاری صنعتی کاموں یا ایسے کاموں کا بوجھ نہیں ڈالا جانا چاہیے جنہیں انجام دینے کے لیے مرد زیادہ اہل اور مناسب ہیں۔

یہاں سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ: ایک عورت کو کام کرنے کی ضرورت کیوں پڑتی ہے؟ کیا وہ اپنے خود کی زندگی کے اخراجات پیدا کرنے کے لیے کماتی ہے۔ اسلام نے، جیسا کہ پہلے ذکر کیا گیا، خاندان کے مرد افراد کو تمام مالی ضرورتوں اور ذمہ داریوں کا پابند بنا کر عورت کو اس ذمہ داری سے آزاد کر دیا ہے۔ ولادت سے لے کر وفات تک، زندگی کے مختلف مراحل میں، عورت سے کام کرنے کا مطالبہ نہیں کیا جاتا ہے تاکہ وہ گھر کی دیکھ بھال اور بچوں کی تربیت کے اہم ترین مشن اور فریضہ کو سب سے زیادہ اہمیت دیتے ہوئے اپنی توجہ اس پر مرکوز رکھ سکیں۔

معروف انگریزی اسکالر سمائل اسمانلز، جو کہ انگریزی نشاۃ ثانیہ کے ایک اہم ستون ہیں، کچھ یوں رقم طراز ہیں:

”وہ نظام جس نے عورتوں سے فیکٹریوں اور صنعتی شعبوں میں کام کرنے کا مطالبہ کیا اس نے خاندانی زندگی کے تانے بانے کو بکھیر کر رکھ دیا۔ اس نے درحقیقت گھر کے بنیادی ڈھانچے اور بنیادوں پر حملہ کیا ہے اور خاندان کے بنیادی ستونوں کو تباہ و برباد کر دیا ہے۔ اس نے معاشرتی رشتوں پر آری چلائی ہے اور ان کی تباہی کا بھی باعث بنا ہے۔ ایک عورت کا حقیقی کام اور پیشہ ایک اچھی، مضبوط اور اخلاقی قدروں کی حامل خاندانی زندگی کو پروان چڑھانا ہے۔“

﴿اہل خانہ کی اخلاقی اور مالی ذمہ داریاں: زیادہ طاقتور جنس ہونے کی حیثیت سے مرد کی فطری، جسمانی اور سماجی خصوصیات اس بات کی متقاضی ہیں کہ وہ یہ ذمہ داریاں اپنے سر لیں کیوں کہ وہ ماہواری، حمل، زچگی، رضاعت اور بعد از ولادت بچے کی دیکھ بھال کے مسائل سے آزاد ہیں۔ عورتیں فطرتاً مردوں کے مقابلہ کمزور ہوتی ہیں اور حیاتیاتی، جذباتی اور معاشرتی طور پر انہیں بچوں کی پرورش اور خانہ ساز کا کردار ادا کرنے کے لیے بنایا گیا ہے۔ ان کے یہاں حسّی و جذباتی ذکاوت بھرپور ہوتی ہے۔

ماہواری، حمل، ولادت، رضاعت اور بچوں کی مسلسل دیکھ بھال کی تکالیف اور بوجھ کی وجہ سے عورتوں کو اکثر آرام کے لیے مختلف وقفوں کی ضرورت ہوتی ہے اور لہذا انہیں گھرانے کی معیشت اور دیکھ

### ”تنگ اور گندہ لباس پہننے والی عورتوں کے لیے

عورتیں جو کپڑے پہننے کے باوجود تنگی دکھائی دیتی ہیں، مردوں کو بہکانے والی، اور خود بہکنے والی،

ان کے سر بختی اونٹوں (اونٹوں کی ایک نسل) کی کوہان کی طرح (بالوں میں اونچے۔ اونچے جوڑے لگانے کی وجہ سے) ایک طرف جھکے ہونگے۔ ایسی عورتیں نہ جنت میں جائیں گی نہ جنت کی خوشبو سونگھ سکیں گی، حالانکہ جنت کی خوشبو طویل مسافت (بہت دور) سے آتی ہے“

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم (صحیح مسلم 5704)

معاشرے میں عورت کے کردار کو لے کر کچھ غلط فہمیاں پائی جاتی ہیں کیوں کہ بد قسمتی سے کچھ "مسلم" ممالک قرآن کی تعلیمات پر عمل پیرا نہیں ہیں۔

کچھ لوگ یہ سوال کر سکتے ہیں کہ کیوں اسلام میں ملازمت کے لیے عورتوں کو مردوں کے مساوی حقوق کی اجازت نہیں ہے!

اس کا جواب یہ ہے کہ: ایک عورت ایسے کام نہیں کر سکتی ہے جس سے اس کے جسم کا استحصال ہوتا ہو، جیسے ماڈلنگ، فلموں میں اداکاری کیوں کہ اس میں اس کے جسم کا استحصال ہے۔ ہم چاہتے ہیں کہ ہماری خواتین کے ساتھ عزت و احترام کا معاملہ ہو۔ بعض کام میں درحقیقت عورت کے جسم کا استحصال، اس کے شرف کی پامالی، اور اس کے نفس کی تحقیر پنہاں ہیں۔

مغربی معاشرہ جو کہ عورت کو بلند مقام دینے کی بات کرتا ہے اس نے درحقیقت اس کو ذلیل کر کے رکھیل، دلربائی کا سامان اور سماجی تہلی بنا کر رکھ دیا ہے جو کہ فن و ثقافت کی رنگین اسکرین کے پیچھے پوشیدہ ہوتی ہے۔ اگرچہ پاک دامنی ایک مذہبی حکم ہے، حجاب کا پہننا اسلام میں کوئی مذہبی فریضہ نہیں ہے بلکہ یہ ایک ثقافتی رواج ہے جسے کبھی بھی ضروری ہونے کی صورت میں بتدریج چھوڑا جاسکتا ہے۔

تاہم، ایک خاتون کو کسی غیر اسلامی ماحول میں کام نہیں کرنا چاہیے سوائے اس کے کہ کوئی شدید مجبوری ہو۔ اگر کوئی عورت کام کرنے کے لیے مجبور ہو تو متعدد واضح ہدایات موجود ہیں جن کی پابندی لازمی ہے:

مختلف طبی شعبہ جات میں، تعلیم میں، معاون پیشوں جیسے سماجی کام، کاؤنسلنگ، سائیکالوجی، سائیکالوجی، اور نگہداشت طفل کے میدانوں میں مسلم خواتین کی شدید اور مسلسل ضرورت ہے۔ ٹیکنالوجی اور مواصلاتی وسائل کی ترقی کے طفیل عورتوں کے لیے کچھ خاص نوعیت کے کام یا کاروبار گھر سے کرنے کے مواقع پیدا ہو گئے ہیں (جیسے سکرپٹس کا کام، ٹائپنگ، تالیف و تصنیف، ایڈٹنگ، طباعت؛ کمپیوٹر کا کام، وغیرہ)۔ یہ ایک مثالی صورت حال ہوگی جو ملازمت پیشہ خواتین کے لیے پیدا ہونے والی بہت ساری ممکنہ تشویشات کو یکسر ختم کر دے گی۔

لیڈی لگ، جو کہ معروف انگریزی رائٹر ہیں، اپنی کتاب New Echo میں رقم طراز ہیں: "مرد مخلوط ماحول پسند کرتے ہیں (اور ان کی یہ ترجیح ہے)۔ مرد و خاتون کی مخلوط تعلیم کا رواج جس قدر زیادہ ہوگا، معاشرے میں اتنے ہی زیادہ ناسچے ہوں گے۔"

جب صحافیوں نے توکل کرمان (یمن کی نوبل انعام یافتہ)  
سے ان کے حجاب کے بارے میں پوچھا؟

انہوں نے جواب دیا...

"ابتدائی دور میں انسان تقریباً ننگا تھا، اور جیسے۔ جیسے اس کی ذہانت میں ترقی  
ہوئی اس نے لباس پہننا شروع کر دیا۔ آج میں جو کچھ ہوں اور جو پہن رہی ہوں  
وہ اس اعلیٰ ترین فکر اور تہذیب کی نمائندگی کرتی ہے جو انسان نے حاصل کی ہے  
اور یہ ترقی کی راہ میں کوئی رکاوٹ نہیں ہے۔"

آج ان کپڑوں کو جسم سے ہٹانا قدیم زمانے میں واپس جانے جیسا ہوگا۔





قرآن کریم مسلم خواتین سے شائستہ لباس زیب تن کرنے، اپنے سروں کو ڈھکنے اور اجنبیوں سے اپنے حسن و جمال کو پوشیدہ رکھنے کے لیے ایک خارجی لباس پہننے کا تقاضا کرتا ہے۔ تاہم، حجاب کی حقیقی اور مکمل پابندی تب ہوتی ہے جب ”پردے“ کا دائرہ وسیع ہو کر مرد یا خاتون کے قلب و دماغ میں جاگزیں ہو جاتا ہے۔ اس کا مطلب ہے کہ جب جنس مخالف کے ساتھ رابطہ ہو تب ایک شخص کو اپنے قلب و دماغ کو ناپاک اور غیر اخلاقی خیالات سے پاک یا محفوظ رکھنا چاہیے۔ اس طرح مرد و خواتین دونوں ایک دوسرے کے ساتھ عزت سے پیش آئیں گے اور باہمی سمجھ بوجھ کا مظاہرہ کریں گے۔

قرآن کلاہک دوسری آیت میں مذکور ہے کہ: ”اے نبی! اپنی بیویوں سے اور اپنی صاحبزادیوں سے اور مسلمانوں کی عورتیں سے کہہ دو کہ وہ اپنے اوپر اپنی چادریں لٹکالیا کریں، اس سے بہت جلدان کی شناخت ہو جایا کرے گی پھر نہ ستائی جائیں گی، اور اللہ تعالیٰ بخشنے والا مہربان ہے۔“ قرآن 33:60

حجاب مسلم خواتین کو کچھ ان مسائل سے آزادی فراہم کرتا ہے جن کا آج خواتین کو سامنا ہے۔ اسلام میں عورت کو ”جنس کا سامان نہیں سمجھا جاتا، نہ ہی اس کے ساتھ استحصال کو روا رکھا جاتا ہے اور اس کے طفیل وہ ذلت آمیز ہراسانی سے محفوظ رہتی ہیں۔

اسلام نے بلاشبہ حجاب کے ذریعہ عورت کو عزت بخشی ہے۔ وہ مسلم خواتین جو حجاب کا اہتمام کرتی ہیں وہ بظاہر زیادہ پرسکون اور اطمینان محسوس کرتی ہیں۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ اسلام نے عزت نفس کی علامت کے طور پر جسم کی نمائش کی اہمیت کو کم کر دیا ہے۔ ایک مسلم خاتون اپنے اندر دیگر مہارتیں فروغ دینے کے لیے آزاد ہے، اور وہ اپنی آرزوؤں کو بروئے کار لانے کے لیے اپنی جسمانی خوبصورتی پر منحصر نہیں ہے۔

◀ **آج کے دور میں مسلم خاتون کا کردار:** اس باب میں آپ کو اس مقام و مرتبے کا ایک تصور دینے کی کوشش کی گئی ہے جو معاشرے میں مسلم خواتین کو حاصل ہیں، نیز ان حقوق کا جو اسلام نے انہیں عطا کیے ہیں۔ مسلم خواتین کو بعینہ وہ تمام حقوق حاصل ہیں جو مسلم مرد کو حاصل ہیں، اور بعض صورتوں میں عورتوں کو کچھ ایسے مراعات حاصل ہیں جو مردوں کو نہیں ہیں۔

اگر ضرورت ہو تو وہ باہر جا کر کام کر سکتی ہے مگر اس پر گھرانے کی مالی ذمہ داری کا بوجھ نہیں ڈالا گیا ہے۔ ان کی خود کی اور بعد میں ان کے بچوں کی بہتری کے لیے ان کی حوصلہ افزائی کی جاتی ہے کہ وہ اعلیٰ تعلیم حاصل کریں۔

(1)

میں ماڈرن لڑکی ہوں...  
 تبھی تو اپنے جسم کو چھپا کر رکھتی ہوں...  
 زمانہ جاہلیت سے ہوتی تو بے حیا ہوتی

(2)

لوگ کہتے ہیں حیا آنکھوں میں ہونی چاہیے، پر میرا خیال ہے کہ حیا کردار  
 میں زیادہ ہونی چاہیے کہ آنکھیں کبھی بھٹک بھی جائیں تو مضبوط کردار پر قابو پا ہی  
 لیتا ہے۔

(3)

اسلام نے عورت کو قید نہیں کیا بلکہ ہوس پرستوں کی نظروں سے محفوظ کیا ہے۔

نامعلوم افراد

پیارے نبی (صلی اللہ علیہ وسلم) نے ماں کے لیے محبت اور احترام کی تاکید فرماتے ہوئے کہا کہ: ”ماں کے قدموں تلے جنت ہے۔“ ایک دوسری روایت میں آتا ہے کہ جب ایک شخص نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم سے چار بار دریافت کیا کہ اس کے حسن سلوک کا مستحق کون ہے؟ آپ نے جواب میں تین بار کہا کہ ”تیری ماں۔“ پھر جب چوتھی بار آپ سے پوچھا گیا تو آپ نے کہا: ”تیرا باپ۔“

اس سے یہ بات واضح ہے کہ ایک مسلمان کے لیے اپنی ماں کا خیال رکھنا کس قدر اہمیت کا حامل ہے۔

﴿حجاب﴾: حجاب اور جنسوں کے درمیان عدم اختلاط سے متعلق جو اسلامی تعلیمات ہیں انہیں مغربی سوسائٹی میں شاید سب سے کم سمجھا گیا ہے۔ اس کی وجہ بڑے پیمانے پر رائج غلط تصور ہے کہ حجاب مسلم خواتین پر عائد شدید پابندیوں کا مظہر ہے۔ جبکہ حقیقت بالکل اس کے برعکس ہے۔ آپ پائیں گے کہ حجاب عورتوں کے تحفظ کا ایک وسیلہ ہے اور انہیں بہت ساری سماجی برائیوں سے نجات دلاتا ہے۔ لفظ ”پردہ“ کا استعمال حجاب کی رسم اور اس کے مفہوم کو بیان کرنے کے لیے بھی کیا جاتا ہے۔

اسلام کی ہدایات صرف افراد تک محدود نہیں ہیں بلکہ وہ پورے معاشرے کی بھلائی کے لیے بھی ضابطے مقرر کرتا ہے۔ حجاب معاشرے کی اخلاقی قدروں کی حفاظت کرتا ہے۔ مردوں کے ساتھ ساتھ مسلم خواتین بھی معاشرے کے اخلاقی معیار کو قائم رکھنے میں تعاون کرتی ہیں۔ قرآن مجید کی سورہ النور کی آیت نمبر 30 میں ارشاد ہے: ”مسلمان مردوں سے کہو کہ اپنی نگاہیں نیچی رکھیں، اور اپنی شرمگاہوں کی حفاظت کریں۔ یہی ان کے لئے پاکیزگی ہے، لوگ جو کچھ کریں اللہ تعالیٰ سب سے خبردار ہے۔“ اسی کی اگلی آیت (نمبر 32) میں عورتوں سے کچھ یوں خطاب ہے: ”مسلمان عورتوں سے کہو کہ وہ بھی اپنی نگاہیں نیچی رکھیں اور اپنی عصمت میں فرق نہ آنے دیں اور اپنی زینت کو ظاہر نہ کریں، سوائے اس کے جو ظاہر ہے اور اپنے گریبانوں پر اپنی اوڑھنیاں ڈالے رہیں، اور اپنی آراکشی کو کسی کے سامنے ظاہر نہ کریں۔“ ان آیات کریمہ سے واضح ہے کہ مرد و خواتین دونوں سے مطالبہ ہے کہ وہ ہمہ وقت عفت و پاکیزگی کا خیال رکھیں، اور خاص طور پر ایک دوسرے کی موجودگی میں۔ یہ تعلیم اس حقیقت پر مبنی ہے کہ اسلام اس بات کو تسلیم کرتا ہے کہ ”پرہیز علاج سے بہتر ہے۔“ Prevention is better than cure دونوں جنسوں کے درمیان عدم اختلاط اس طرح کے حالات کی پیش بندی کے لیے تجویز کی گئی ہے کیوں کہ اس سے معاشرے کی اخلاقی قدروں کا جنازہ نکل سکتا ہے، نیز اس سے معاشرے کو بدکاریوں، کم عمر میں حمل کی حالتوں اور جنسی طور پر منتقل ہونے والی بیماریوں جیسی مشکلات سے نجات ملتی ہے۔

## بہن کی فضیلت

تم جب اپنی بہن کے گھر جاؤ تو اپنی بساط کے مطابق کچھ لے جا یا کرو، کیونکہ تمہاری بہن کا تم پر حق اسے والدین کی وراثت سے ملا ہے اور انتہائی بد نصیب ہے وہ شخص جس کی بہن ناراض ہو اور اسکی یا اسکی بہن کی موت واقع ہو جائے۔ اللہ کا شکر ادا کرو کہ اللہ نے تمہیں یہ پاکیزہ رشتہ عطا کیا ہے اور تمہیں تمہارے دکھوں کا سہارا عطا کیا ہے۔

حضرت علیؓ

﴿ **مسلم خواتین کی معاشرتی حالت:** اسلام کی آمد کے بعد خواتین کی معاشرتی حالت میں ڈرامائی تبدیلیاں رونما ہوئیں۔ معاشرے کو قرآن وحدیث کے ذریعہ واضح ہدایات دی گئیں کہ بیٹی، بیوی اور ماں کے کردار میں عورتوں کے ساتھ کس طرح سلوک کرنا ہے۔

**بیٹی:** ذلت یا فقر کے ڈر سے نوزائیدہ بچیوں کو جان سے مار دینے کے جاہلی رسم کو اسلام نے یکسر مسترد کر دیا۔ قرآن مجید میں اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: ”اور اپنی اولاد کو افلاس کے سبب قتل مت کرو۔ ہم تم کو اور ان کو رزق دیتے ہیں اور بے حیائی کے جتنے طریقے ہیں ان کے پاس بھی مت جاؤ خواہ اعلانیہ ہوں خواہ پوشیدہ“ ﴿قرآن 6: 151۔ اور وہ جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے جس کو چاہتا ہے بیٹیاں دیتا ہے اور جسے چاہتا ہے بیٹے دیتا ہے۔ ﴿قرآن 42: 51

بچوں کے قتل سے منع کرنے کے بعد، اسلام نے ایک باپ کو تعلیم دی کہ وہ اپنی بیٹیوں کی تربیت ویسی ہی کرے جیسے وہ اپنے بیٹوں کی کرتا ہے۔ درحقیقت، ایک بیٹی کی اچھی پرورش پر باپ کے لیے جنت کی بشارت ہے۔ نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے:

”جو شخص دو لڑکیوں کی ان کے بچپن سے پرورش کرے گا، روز قیامت وہ میرے ساتھ ایک ہاتھ کی دو انگلیوں کی طرح جڑا ہوا نظر آئے گا۔“

**بیوی:** اسلام نے عورتوں کی حیثیت کو، جو کہ پہلے باندیوں سے تھوڑی بڑھ کر تھی، تمام سطحوں پر مردوں کے مساوی کر دیا۔ قرآن کریم اس بات کی وضاحت کرتا ہے کہ ازدواجی زندگی میں مرد و زن کے حقوق ایک دوسرے کے مماثل ہیں۔

نکاح دو رحوں کا ایک حسین امتزاج ہے، جس کا مقصد ایک دوسرے سے تسکین حاصل کرنا ہے۔ قرآن کریم درج ذیل آیت کے ذریعہ انتہائی خوبصورت انداز میں اس رشتے میں مساوات کو بیان کرتا ہے، ارشاد ہے: ”وہ تمہارا لباس ہیں اور تم ان کے لباس ہو۔“ ﴿قرآن 2: 187۔ اسلام مزید یہ تعلیم دیتا ہے کہ عورتوں کے ساتھ شفقت اور رحمدلی کا معاملہ کیا جائے اور یہ کہ نکاح و طلاق میں انہیں مساوی حقوق دیے جائیں۔ اگر واقعی ضروری ہو تو اسلام انہیں طلاق کے مطالبے کا حق بھی عنایت کرتا ہے۔

**ماں:** ماں کے کردار میں، مسلم خواتین اپنی اعلیٰ ترین معاشرتی قدر و منزلت حاصل کرتی ہیں۔ قرآن مجید بار بار مسلمانوں کو اپنے والدین، بطور خاص ماں، کا خیال رکھنے کی تلقین کرتا ہے۔

(1)

دنیا کی سب سے بڑی دولت نیک بیوی  
"دنیا فائدہ اٹھانے کی چیز ہے اور دنیا میں  
سب سے زیادہ فائدہ دینے والی چیز نیک بیوی ہے"

(2)

عورت کی برکت یہ ہے کہ اس سے پہلی بار بیٹی پیدا ہو۔

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

اور اللہ تعالیٰ کی نشانیوں کو صرف وہی لوگ سمجھتے ہیں جو غور و فکر کرتے ہیں اور اللہ کا تقرب حاصل کرتے ہیں۔ اس کے علاوہ، قرآن نے ہمیں ایک چھوٹی سی آسان دعا سکھلائی ہے: ”رب زدنی علماً“ (اے میرے رب! میرے علم میں زیادتی عطا فرما)۔ قرآن-20:114

نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے علم حاصل کرنے کے لیے اپنی بیویوں کی حوصلہ افزائی فرمائی اور ایک مرتبہ فرمایا کہ ”دین اسلام کا نصف حصہ حضرت عائشہ رض (ان کی بیوی) سے سیکھا جاسکتا ہے۔“ رسول کی ”رسول کی وفات کے بعد، مسلمان امہات المؤمنین (رضی اللہ عنہن) سے دینی مسائل میں ان کی رائے دریافت کیا کرتے تھے۔ آج کل آپ مسلم خواتین کو بہت سارے پیشوں میں فعال پائیں گے، جیسے طب، نرسنگ اور تدریس وغیرہ۔ یہاں یہ ذکر کرنا دلچسپی سے خالی نہ ہوگا کہ ٹھیک اس وقت جب اسلام خواتین کو علم و بصیرت کے زیور سے آراستہ کر رہا تھا تب یورپ میں کسی بھی طرح کے علم کا مظاہرہ کرنے والی خاتون کو نذر آتش کیے جانے کا خطرہ درپیش ہوتا تھا۔ مزید برآں، بیشتر یونیورسٹیاں، یہاں تک کہ ریاستہائے متحدہ امریکہ میں بھی، عورتوں کو اس صدی سے قبل تک اعلیٰ تعلیم کے حصول کی اجازت نہیں دیتی تھیں۔

﴿مردوں کی اقتصادی حالت: قرآن کریم میں اللہ تعالیٰ کا ارشاد گرامی موجود ہے کہ: ”مردوں کا اس میں سے حصہ ہے جو انہوں نے کمایا اور عورتوں کے لئے ان میں سے حصہ ہے جو انہوں نے کمایا، اور اللہ تعالیٰ سے اس کا فضل مانگو، یقیناً اللہ ہر چیز کا جاننے والا ہے۔“ قرآن 4:32

اس آیت نے مرد و خواتین کے کام کے تعلق سے مساوات کو بیان کر دیا۔ ایک شادی شدہ خاتون کو اپنی خود کی دولت میں سے کچھ خرچ کرنے کی بھی ضرورت نہیں ہے کیوں کہ اس کے اخراجات کی ذمہ داری اس کے شوہر پر عائد کی گئی ہے۔

اسلام نے بوقت شادی شوہر پر مہر کی ادائیگی لازم قرار دے کر بھی عورت کی اقتصادی حالت کو تحفظ عطا کیا ہے۔ قرآن کی سورہ النساء، آیت نمبر 5، میں ارشاد ہے کہ: اور عورتوں کو ان کے مہر راضی خوشی سے دے، ہاں اگر وہ خود اپنی خوشی سے کچھ مہر چھوڑ دیں تو اسے شوق سے خوش ہو کر قبول کر لیں۔ ”دلچسپ بات یہ ہے کہ اس کا مخاطب صرف شوہر نہیں ہے بلکہ خاتون کے رشتے دار بھی ہیں۔ ان کا اس پر کوئی حق نہیں ہے۔

بالآخر، اسلام نے عورت کو وراثت کا حق عطا کیا۔ قرآن کریم میں وضاحت موجود ہے کہ: ”ماں باپ اور خویش واقارب کے ترکہ میں مردوں کا حصہ بھی ہے اور عورتوں کا بھی۔ (جو مال ماں باپ اور خویش واقارب چھوڑ مرے) خواہ وہ مال کم ہو یا زیادہ (اس میں) حصہ مقرر کیا ہوا ہے۔“ قرآن 4:7

## رشتے کے انتخاب میں دین اول

عورت سے نکاح چار چیزوں کی بنیاد پر کیا جاتا ہے

اس کے مال کی وجہ سے

اس کے خاندانی شرف کی وجہ سے

اس کی خوبصورتی کی وجہ سے

اور اس کے دین کی وجہ سے

اور تم دیندار عورت سے نکاح کر کے کامیابی حاصل کرو (اگر تم دینداری کو ترجیح نہ

دو گے تو خیر و بھلائی سے محروم رہ جاؤ گے۔

رسول اللہ ﷺ (صحیح بخاری: 5090)



تکلیفوں کی وجہ اصل میں یہی بات تھی کہ ان سے بھی بالواسطہ وہی کام کرنے کی توقع کی جاتی تھی جو کہ مرد انجام دیتے ہیں اور یہ جسمانی طور پر ممکن نہ تھا۔ اس لیے انہیں ایسا سامان تصور کیا گیا جسے بیکار ہونے کے بعد پھینک دیا جاتا تھا۔ ان لوگوں نے خواتین کو صرف جنسی تسکین کا ایک سامان سمجھا۔ حسن و جمال کی طرف میلان ایک ایسا فطری عمل ہے جو تمام زندہ ہستیوں میں مشترک ہے، اور جنسی حسن و جمال حسن کی تمام دیگر شکلوں میں سب سے زیادہ مؤثر ہوتا ہے۔ اسلام نے انسانوں کے درمیان اس کشش کو شائستہ حدود میں برقرار رکھنے کے لیے طریقے بتائے۔ حسن و جمال کی جاذبیت پر قابو پانا مشکل ترین امر ہوتا ہے اور یہی وجہ ہے کہ یہ بات کہنا بالکل درست ہے کہ حسن چوروں کو سونے سے بھی زیادہ جلد اُکسا دیتا ہے۔ معاشرے کی سلامتی کے لیے مرد و خواتین کا ایک دوسرے سے علاحدہ رہنا انتہائی ضروری ہے۔ خواتین فطرتاً سادہ لوح اور بھولی واقع ہوئی ہیں اس لیے جلد استحصال کا شکار ہو جاتی ہیں جبکہ مرد فطرتاً موقع پرست اور استحصال پسند ہوتے ہیں۔ ایک عورت کی اندر ودیعت کردہ مادرانہ شفقت اس کو استحصال کی مختلف شکلوں کا شکار بنا دیتی ہے۔

◀ **مسلم خواتین کی روحانی حالت:** اسلام میں خواتین کی روحانی حالت کسی طور مردوں سے کمتر نہیں ہے۔ خواتین کے لیے اسلام نے سب سے اہم جس تبدیلی کو متعارف کرایا وہ ان کی روحانی حالت کو بلند کرنا ہے۔ اللہ تعالیٰ نے قرآن مجید میں واضح طور پر اعلان فرمادیا کہ خواتین کی روحانی صلاحیتیں مردوں جیسی ہوتی ہیں، اور یہ کہ وہ اپنی کوششوں کے ذریعہ مساوی روحانی انعامات کی مستحق قرار پاسکتی ہیں۔ قرآن کہتا ہے: بلکہ جو کوئی بھی نیک کام کرتا ہے، خواہ وہ مرد ہو یا عورت، وہ یقیناً جنت میں داخل ہوگا۔ قرآن-4:124۔ قرآن کریم متعدد آیات میں مرد و عورت دونوں کو مخاطب کرتے ہوئے بار بار اس مساوات کی تاکید کرتا ہے۔ عورتوں کی روحانی حالت کے تعلق سے یہ کسی چوں چرا کی گنجائش بالکل بھی نہیں چھوڑتا۔ ارشاد ہے: ”یقیناً مرد و خواتین جو اللہ کی مرضی کے سامنے سر تسلیم خم کر دیتے ہیں ان کے لیے مغفرت اور زبردست اجر ہے۔“ قرآن-33:35

◀ **مسلم خواتین کی فکری و ذہنی حالت:** اسلام اس بات پر زور دیتا ہے کہ تعلیم مرد و خواتین دونوں کے لیے یکساں اہمیت کی حامل ہے، اور علم حاصل کرنا ہر مسلمان مرد و عورت پر فرض ہے۔

”حدیث نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے دونوں کو تلقین کی ہے کہ علم حاصل کرو خواہ اس کے لیے تمہیں چین ہی کیوں نہ جانا پڑے،“ اور ”مہد سے لحد تک علم حاصل کرتے رہو۔“ علم ہمیں غور و فکر کرنے کے قابل بناتا ہے

### زمری سے عورت کی اصلاح کریں

عورت پسلی کی ہڈی کی طرح ہے، اگر تم اسے بالکل سیدھا کرنا چاہو گے تو تم اسے توڑ دو گے (یعنی جدائی کی نوبت آ پہنچے گی) اور اگر تم عورت سے فائدہ اٹھانا چاہو تو تمہیں اس کا ٹیڑھا پن برداشت کرتے ہوئے اس کی (خوبیوں) سے فائدہ اٹھانا چاہیے۔

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم (صحیح بخاری: 5184)

کے ساتھ شوہروں کا برتاؤ اچھا نہ ہو تو انہیں طلاق کے مطالبہ کا کوئی حق نہ تھا۔ معاشرے میں ان کی کوئی قابل ذکر حیثیت نہ تھی نہ ہی بیوی، ماں یا بیٹی کی حیثیت سے ان کی کوئی عزت تھی۔ صحیح بات تو یہ ہے کہ بیٹیاں بیکار سمجھی جاتی تھیں اور اکثر پیدا ہوتے ہی ان کا گلا گھونٹ دیا جاتا تھا۔ عورتوں کو معمولی تعلیم دی جاتی تھی یا بالکل بھی نہیں دی جاتی تھی، مذہبی معاملات میں ان کی کوئی رائے نہیں ہوتی تھی کیوں کہ انہیں روحانیت اور عقل کے اعتبار سے ہیچ سمجھا تھا۔

دنیا کے بیشتر علاقوں میں، یہاں تک کہ خود ریاستہائے متحدہ امریکہ میں، انیسویں صدی تک انہی ناگفتہ بہ حالات کی کارفرمائی رہی، البتہ بیسویں صدی کے اوائل میں عورتوں کو کچھ بنیادی حقوق عطا کیے گئے۔ لیکن ملک عرب میں، چھٹی صدی عیسوی میں اسلام کے ظہور کے ساتھ ہی خواتین کی حالت میں ڈرامائی تبدیلی آگئی تھی۔ دیکھتے ہی دیکھتے خواتین کو مساوی حقوق دے دئے گئے اور انہیں مردوں کے مساوی درجہ عطا کیا گیا۔ قرآن کریم میں، اللہ تعالیٰ واضح لفظوں میں ارشاد فرماتا ہے کہ اس نے مرد و خواتین کو مساوی بنا کر پیدا کیا۔ اللہ فرماتا ہے کہ: "اس نے تم سب کو ایک ہی جان سے پیدا کیا ہے، پھر اسی سے اس کا جوڑا پیدا کیا۔" قرآن 39:6

نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے خود اللہ کے احکامات بجالاتے ہوئے عورتوں کے ساتھ انتہائی عزت و احترام اور شفقت کا معاملہ کیا۔ مرد و خواتین کے حقوق کے درمیان تمیز کرتے وقت بہت سارے عوامل اسلام کے پیش نظر تھے۔ ان حقوق کی مقدار برابر ہے مگر یہ مماثل نہیں ہیں۔ تنازعہ اس وقت شروع ہوتا ہے جب ہم مساوات اور مماثلت کے درمیان فرق نہیں کر پاتے ہیں۔

اسلام دونوں کو حقوق کے ساتھ مساوی مقام عطا کرتا ہے جو دونوں کے مناسب حال ہے اور جن سے لطف اندوز ہونے کے لیے وہ جسمانی، حیاتیاتی، روحانی، معاشرتی اور جذباتی ہر اعتبار سے قادر ہیں۔ خواتین نازک ہوتی ہیں اور ان کے ساتھ انتہائی احتیاط برتنا پڑتا ہے۔ ذرا سی بد احتیاطی انہیں نقصان پہنچاتی ہے اور ان کو پہنچنے والا نقصان سماج کے پورے ڈھانچہ کو نقصان پہنچاتا ہے۔ یہ بات خلاف از عقل محسوس ہو سکتی ہے کہ ان کی نزاکت انہیں کمزور نہیں کرتی ہے۔ کیا ہم اس کہاوت سے انکار کی جسارت کر

سکتے ہیں کہ *The hand that rocks the cradle rules the world*

(جو ہاتھ جھولا جھولاتے ہیں وہ دنیا پر حکمرانی کرتے ہیں)۔

◀ مرد و خواتین دونوں کو مساوی یا مماثل حقوق دینا شدید نا انصافی ہوگی: ظہور اسلام سے قبل خواتین کی

## عورت

اگر بیٹی ہے تو رحمت، اگر بیوی ہے تو شوہر کے نصف ایمان کی وارث اور اگر ماں ہے تو اسکے قدموں میں جنت۔

لیکن

فاطمہ الزہراء رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی شان دیکھئے:

اس باپ کے لیے رحمت جو خود رحمت اللعالمین ہیں اس شوہر کے لیے نصف ایمان جو خود کامل ایمان ہیں اور آپ کے قدموں میں ان بیٹیوں کی جنت ہے جو خود جنت کے سردار ہیں۔

نامعلوم افراد

## کیا اسلام میں عورتوں کے حقوق مردوں کے مساوی یا مماثل ہیں؟

اسلام میں عورتوں کے ساتھ سلوک کے تعلق سے جو اسلامی تعلیمات موجود ہیں انہیں انتہائی غلط انداز میں سمجھا گیا ہے۔ مسلم خواتین کے بارے میں مغربی دنیا کا تصور عام طور پر یہ ہے کہ وہ مظلوم ہوتی ہیں اور انہیں ان کے حقوق سے محروم رکھا جاتا ہے۔ ذرائع ابلاغ میں مسلم خواتین کو عام طور پر مکمل پردے میں اور اپنے شوہروں کے ماتحت دکھایا جاتا ہے اور بتایا جاتا ہے کہ انہیں خادماؤں سے ذرا اونچا مقام حاصل ہے اور بس۔ لیکن تاریخی حقائق اس بات کے گواہ ہیں کہ جو حقوق مسلم خواتین کو 1450 سالوں سے حاصل ہیں انہیں حاصل کرنے کے لیے مغربی خواتین کو آج بھی جدوجہد کرنی پڑ رہی ہے۔

اسلام ایک ایسا معاشرتی نظام پیش کرتا ہے جس میں ہر ایک فرد کے حقوق و واجبات مقرر ہیں۔ اس طرح کا نظام مرد و خواتین کی ذمہ داریوں اور ان کی حیثیت کے درمیان ایک توازن فراہم کرتا ہے، جس میں مرد و خواتین کے درمیان مساوات کا خیال رکھا جاتا ہے۔ درحقیقت اس طرح کا معاشرہ 1450 برس قبل محمد صلی اللہ علیہ وسلم نے اللہ کے ذریعہ نازل کردہ قرآن مقدس کی ہدایات کی روشنی میں برپا کیا تھا۔ آئیے ذرا ہم ان حقوق کا جائزہ لیتے ہیں جو مسلم خواتین کو حاصل ہیں، ساتھ ہی دیگر خواتین کے مسائل اور معاشرے میں ان کے مقام و مرتبہ پر بھی ایک نگاہ ڈال لیتے ہیں۔

« **اسلام میں عورتوں کے ساتھ سلوک:** سب سے پہلے اس بات کو سمجھنا ضروری ہے کہ اسلام کے ظہور سے قبل عورتوں کی حالت کیا تھی۔ اسلام سے قبل ملک عرب اور دنیا کے دیگر ممالک میں ان کی حیثیت غلاموں اور ذاتی املاک جیسی تھی اور ان کے اپنے کچھ حقوق نہ تھے۔ عورتیں نہ تو کسی جائیداد کی مالک ہو سکتی تھیں نہ ہی انہیں وراثت میں کوئی حصہ ملتا تھا۔ خانگی امور میں، انہیں اپنے بچوں پر یا اپنے خود کے کوئی حقوق نہ تھے۔ درحقیقت، انہیں فروخت کیا جاسکتا تھا یا ان کا شوہر جب چاہے انہیں چھوڑ سکتا تھا۔ اگر ان

## عورت کے شکم میں ۹ مہینے رہ کر

عورت کے شکم میں ۹ مہینے رہ کر

عورت کے ہی جسم سے باہر نکل کر

عورت کے ہاتھوں میں ہی بچپن گزار کر

عورت کی جوانی کو بڑھاپہ میں بدل کر

عورت کے پیروں تلے جنت چھوڑ کر

عورت کے بنا زندگی بھی نہیں گوارہ

عورت کی تمام خوبیوں پر پردہ ڈال کر، پھر بات۔ بات پر اس کا دل توڑ کر

اور دنیا کا ہر عیب اسی کو نظر کر

اور، تمہیں عورت میں ہی کم عقلی، جہالت اور کمزوری نظر آتی ہے۔

ایسا کیوں؟

ایم۔ ٹی۔ کیفی

## فہرست مشمولات

۷	﴿﴾ اسلام میں خواتین کے ساتھ سلوک
۹	﴿﴾ دونوں کو مساوی یا مماثل حقوق دینا...
۱۱	﴿﴾ مسلم خواتین کی روحانی حالت:
۱۱	﴿﴾ مسلم خواتین کی ذہنی و فکری حالت:
۱۳	﴿﴾ مسلم خواتین کی اقتصادی حالت:
۱۵	﴿﴾ مسلم خواتین کی معاشرتی حالت:
۱۵	• بیٹی
۱۵	• بیوی
۱۵	• ماں
۱۷	﴿﴾ حجاب
۱۹	﴿﴾ آج کے دور میں مسلم خواتین کا کردار:
۲۳	﴿﴾ اہل خانہ کی اخلاقی اور مالی ذمہ داریاں:

سبحان اللہ۔ اسلام میں خواتین کو اس قدر اعلیٰ اور اعلیٰ مقام پر فائز کیا گیا ہے، یہاں تک کہ ان کا تذکرہ خود رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے لگا تار تین بار فرمایا۔ تو آج کل کی خواتین کو مطلوب شرافت میں اور کیا کمی ہے؟ (اسلامی تعلیمات میں) عورتوں کی شرافت اور آزادی میں کس چیز کی کمی ہے، جس کا یہ لوگ اعلان کر رہے ہیں؟

اس لیے جن لوگوں نے اسلام میں عورتوں کو مظلوم، گونگے، ظالم وغیرہ کے طور پر آواز دی، انہیں معلوم ہونا چاہیے کہ وہ غلطی پر تھے۔ یا تو وہ اسلامی تاریخ سے مکمل طور پر اندھے ہیں یا پھر تاریخ پر پردہ ڈالنے کے لیے جان بوجھ کر مہم چلا رہے ہیں۔ پلیز، ان کے جال میں نہ آئیں۔ واللہ اعلم (اور) صرف اللہ ہی بہتر جانتا ہے۔



کر لیتے ہیں۔ وہ خود اس قابل نہیں ہیں کہ یکسانیت، شناخت اور مساوات (جو کہ انصاف کا بھی متقاضی ہوتا ہے) کے درمیان فرق کر سکیں۔ ان مثالوں پر غور کریں: بہت ساری چیزیں ایسی ہیں جو صرف ایک باپ ہی اپنے بچوں کے لیے کر سکتا ہے، اسی طرح ایسی چیزوں کی کمی نہیں جو صرف ایک ماں ہی انجام دے سکتی ہے۔ اس سلسلہ میں، دونوں جنسوں کے درمیان مساوات کا فیصلہ اس بنیاد پر کیا جائے گا کہ ہم انہیں کتنا احترام دیتے ہیں۔ ایک دوسری مثال ملاحظہ کریں: اس قیاس کا استعمال مردوزن کے درمیان مساوات پر کیا جاتا ہے۔ وہ دونوں یکساں احترام اور عزت کے حقدار ہیں۔ اسلام ان کے درمیان مساوات کی اس تشریح میں یقین رکھتا ہے۔

دونوں جنسوں کے درمیان مساوات کا تقابل درست نقطہ نظر سے کیا جانا چاہیے نہ کہ عقلی بنیاد پر۔ ہم حضرت سلیمان علیہ السلام کے انصاف کو کس طرح دیکھیں گے جب کہ دو عورتیں ان کے پاس ایک نومولود کا مسئلہ لے کر آئی تھیں اور دونوں دعویٰ کر رہی تھیں کہ بچہ اسی کا ہے۔ کیا انہوں نے اپنی عقل کو اپنے فیصلہ کی بنیاد بنایا یا بس ان کے دعوؤں کے نقطہ نظر کو؟

میری تحقیق کا مقصد اسلام میں عورتوں کے حقوق کے تعلق سے غلط بیانیوں اور غلط فہمیوں کی شناخت کر کے ان کا ازالہ کرنا ہے۔ اس تحقیقی مقالے میں عورتوں کے حقوق کے تعلق سے پانچ عام غلط بیانیوں کا جائزہ لیا گیا ہے، جیسے ان کی روحانی حالت، فکری حالت، معاشی حالت، سماجی حالت اور حجاب (جسم کے مخصوص اعضاء کو ڈھلکانا)۔ معدنیات میں سب زیادہ کارآمد لوہا ہوتا ہے جبکہ سب سے بیکار سونا ہوتا ہے (ایک مبالغہ آمیز موازنہ)۔ کیا باعتبار نوع سونے کی طرح لوہے کو لوہے کی کسی تجوری میں اور پینک کے لاکس میں کسی ویلوٹ باکس میں نہ رکھنا نا انصافی ہے؟

ایک جج کی طرح اس پر غور و فکر کریں۔

میں جناب شکیل اللہ خاں صاحب (ریٹائرڈ پرنسپل، جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی) اور پروفیسر اروند کمار (ریٹائرڈ، صدر شعبہ ہندی، این این کالج، بہار یونیورسٹی، بہار) کا تہہ دل سے شکر گزار ہوں جنہوں نے میری اس کاوش ’اسلام میں عورتوں کے حقوق، مردوں کے مٹاوی یا مماثل‘ کو سراہا اور پیش قیمتی مشوروں سے نوازا اور اسے کتاب کی شکل میں لوگوں کے پڑھنے کے قابل بنایا۔ اللہ رب العزت ان پر اپنی رحمتیں نازل فرمائے۔ آمین!

کیا درحقیقت وہ قدرت ہی ہے جس نے انسانی سوچ کو پراگندہ کیا ہے۔ جس کی وجہ سے ہم نے امتیازی الفاظ وضع کیے ہیں جیسے خوبصورتی، نزاکت اور خوبصورت، شائستہ اور غیر شائستہ، نازک اور سخت وغیرہ؟ جو بات اکثر لوگوں کی نگاہوں سے اوجھل رہتی ہے وہ یہ کہ اسلام دونوں جنسوں کے درمیان مساوات کو یقینی بناتا ہے، نہ کہ زندگی کے جملہ میدانوں میں یکسانیت چاہتا ہے۔ اس میں مرد و زن کے حقوق مساوی ہونے کی ضمانت ہے مگر یکساں ہونے کے نہیں۔ بیشتر غیر مسلم حضرات جو اسلام کی قرآنی تعلیمات سے بالکل ناواقف ہوتے ہیں وہ اسلام کو اس انداز میں پیش کرتے ہیں گویا وہ خواتین پر سراپا ظلم ڈھانے والا مذہب ہو۔ ان کی غلط فہمیاں کچھ تو ان کی عدم واقفیت کی وجہ سے ہیں اور کچھ نام نہاد قرآن وحدیث کے جانکاروں کی وجہ سے ہیں۔

کچھ تنقیدیں جو مرد و زن کے درمیان حقوق کے سلسلہ میں عدم مساوات کو اجاگر کرتی ہیں وہ انتہائی مضحکہ خیز بلکہ احمقانہ ہیں کہ کیوں عورتوں کو اپنے بدن کا اتنا حصہ دکھانے کی اجازت نہیں ہے جتنا کہ مردوں کو ہے؟۔ کچھ اختلافات ان کی حیاتیاتی اور جسمانی ضرورتوں اور ان کے جسموں کے فطری تقاضوں پر مبنی ہیں۔ نام نہاد جدید معاشرہ ان کے درمیان امتیازی خصوصیات کو فرق کہہ کر اپنی تفریح کے لیے عورتوں کا استحصال کرنا چاہتا ہے۔

دنیا میں کہیں بھی اور خاص طور پر ہندوستان میں بیشتر غیر مسلم اسلام میں مرد و زن کے حقوق کے بارے میں انتہائی غلط معلومات رکھتے ہیں۔ اس کی وجہ اسلام کے تعلق سے ان کی عصبیت یا عدم واقفیت نہیں ہے بلکہ اس کے لیے خود مسلمانوں کے ذریعہ اسلامی اصول و ضوابط کی غلط اور تحریف شدہ تشریح بھی ذمہ دار ہے۔ اسلام کی غلط تصویر پیش کرنے والے یہ لوگ بھی اس کے لیے پوری طرح ذمہ دار نہیں ہیں۔ وہ لوگ جو اسلام کی تحریف شدہ تصویر پیش کرنے کے ذمہ دار ہیں وہ درحقیقت نام نہاد اسلامی اسکالر ہیں جن کے پاس اسلام کی انتہائی سطحی معلومات ہیں جیسے سیاسی پارٹیاں۔ اس سلسلہ میں وہ مذہبی پارٹیاں بھی قابل ذکر ہیں جو حب الوطنی کی تشریح اپنے خود کے مفاد کے لیے کرتی ہیں۔ ان کی ٹی آر پی کا انحصار ان کے فالوورز کی تعداد پر ہے۔ وہ لوگ جو خطابت میں دسترس رکھتے ہیں عام بھولی بھالی عوام کو الفاظ کی بازیگری سے رام

## سخن ہائے گفتنی



انسان خواہ مرد ہو یا عورت کسی بھی دیگر جاندار کی طرح مخصوص حیاتیاتی اور جسمانی فرق کے ساتھ دو یکساں مشینوں کا امتزاج ہوتا ہے اور وہ خدا کی سب سے خوبصورت اور انوکھی تخلیق ہے۔ قرآن وحدیث (قرآن پاک کی تفسیر) دراصل وہ چشمہ ہدایت ہے جو اس بابت ہماری رہنمائی کرتی ہے کہ زندگی کو مفید، کارآمد، آرام

دہ، اور مسائل سے پاک بنانے کے لیے اس مشین کا کس طرح استعمال کرنا چاہیے۔ جب ان دونوں کے درمیان مساوی حقوق کی بات ہوتی ہے تو مرد اس فرق کا استحصال اپنے ذاتی مفادات کے لیے کرتے ہیں۔ اسلامی شریعت میں خواتین کے لیے بڑی حد تک ان کے فطری جسمانی نظام کو ملحوظ خاطر رکھا گیا ہے۔ جو لوگ اسلام کی حقانیت کو نہیں مانتے وہ اپنے مذہبی عقائد میں اندھے یقین (عقیدہ) کی وجہ سے اس فرق کو محسوس کرنے سے قاصر رہتے ہیں۔

قدرت نے مرد وزن کے درمیان فرق کیوں رکھا ہے؟ ان کی آوازوں میں فرق کیوں ہے؟ ان کے درمیان داڑھی مونچھ کا فرق کیوں ہے؟ ان کی جسمانی ہیئت اور ساخت وغیرہ میں یکسانیت کیوں نہیں ہے؟ ایسا کیوں نہیں ہے کہ دونوں کے دونوں بچے جننے کے قابل ہوں اور کیوں نہیں مرد بھی خواتین کی طرح بچوں کو دودھ پلا سکتا؟

ایسا محسوس ہوتا ہے گویا قدرت نے اپنی مخلوقات کو صلاحیتیں عطا کرنے میں بڑی نانا انصافی سے کام لیا ہے۔ غور کریں کہ کچھ پہاڑیاں بنجر اور کچھ گھنا مرغ زار ہوتا ہے۔ سورج کی اپنی روشنی ہے جبکہ چاند اپنی روشنی کے لیے سورج پر منحصر ہے۔ ہماری دھرتی کے کچھ حصے برف سے ڈھکے ہیں جبکہ کچھ بالکل بے آب و گیاہ ہیں۔

اسلام نے بھی اسی فطری فرق کو ملحوظ رکھتے ہوئے مرد وزن کے لیے الگ-الگ ضابطے مقرر کیے ہیں۔ ان کے جسموں کو ڈھانپنے، فرائض کو انجام دینے اور نجاست و طہارت وغیرہ کے ضابطے بالکل یکساں نہیں ہیں۔

سنو! عورت کو کھلونا سمجھنے والو۔۔۔  
 جس کے نام سے ہے رونق وہ ہے عورت...  
 تو جس کا بیٹا ہے وہ ہے عورت...  
 جس کے قدموں تلے رکھی ہے جنت وہ ہے عورت...  
 تو جس کا بھائی ہے وہ ہے عورت...  
 جو کل تیرا نصیب ہے وہ ہے عورت...  
 تو جس کا باپ بنیگا وہ ہے عورت...  
 کچھ تو احساس کر اس ذات کا جس کا نام ہے عورت۔

ایم ٹی کیفی

کیا اسلام میں عورتوں کے حقوق مردوں کے

مساوی یا مماثل ہیں؟

محمد تشکیل کیفی

اسلام میں عورتوں کے حقوق  
مردوں کے مساوی یا مماثل ہیں؟

محمد تشکیل کیفی

